श्रीगंधा

केआईओसीएल लिमिटेड की
राजभाषा ई-पत्रिका

KUDREMUKH
केआईओसीएल लिमिटेड

हमारी दूरदृष्टि

गुणवत्ता और उत्पादकता के उच्चतम अंतरराष्ट्रीय मानकों, प्रौद्योगिकीय एवं पर्यावरणीय उत्कृष्टता से युक्त विश्वस्तरीय खनन कंपनी के रूप में उभरना और भारत में अनुलाभीकरण एवं पैलेटीकरण उद्योग में अग्रणी बनना और वैश्विक विश्वसनीयता स्थापित करना।

हमारा लक्ष्य

- विश्वास और आपसी अनुलाभों के आधार पर सहज आपूर्ति श्रृंखला सुनिश्चित करने के लिए ग्राहकों और पूर्तिकर्ताओं साथ दीर्घकालीन संबंध बनाना।
- नैतिकता और सत्यनिष्ठा के साथ व्यापार।
- कंपनी के उत्पादन केन्द्रों के आस-पास की सामाजिक, आर्थिक परिस्थिति में सुधार करने का प्रयास करना।
- सतत ज्ञानार्जन करना।
- प्रौद्योगिकी और बदलते वैश्विक परिदृश्य की अनुकूलनशीलता।
- कर्मचारियों को विकास के अवसर, मान्यता और प्रतिफल प्रदान करना।

हमारा उद्देश्य

- विस्तारण और विविधिकरण द्वारा प्रगति।
- नए बाज़ार और अवसरों का पता लगाना।
- प्रक्रमों में परिवर्तन लाते हुए लागत कटौती द्वारा प्रतिस्पर्धा बनाना।
- विविधिकृत कारोबारी यूनिटें बनाते हुए कारोबार के नए क्षेत्रों का पता लगाना।
- ज्ञान, कौशल और अभिवृति में सुधार लाने के लिए कार्मिकों के क्षमता निर्माण में लगातार निवेश करना हमारे मुख्य नैतिक मूल्य।

राजभाषा गृह पत्रिका समिति

संरक्षक

श्री एम वि सुब्बा राव

अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक

मार्गदर्शक

श्री स्वपन कुमार गोराई

निदेशक (वित्त)

परामर्शदाता

श्री एस राजेंद्र

महा प्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादक

श्री एस रजनीश कुमार

उप प्रबंधक (राजभाषा)

उप संपादक

सुश्री चंदा रानी

हिंदी अधिकारी

रूपरेखा विन्यास

श्री टी वी शेखर

सहायक प्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी)

"हिंदी है जन-जन की भाषा, जन-जन के मन की अभिलाषा
सरल-सुबोध-सहज अभिव्यक्ति, निज भाषा हर मन की शक्ति"

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1	अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक - आशीर्वचन	5
2	निदेशक (वित्त) - उद्बोधन	6
3	महा प्रबंधक (मानव संसाधन) - संबोधन	7
4	संपादकीय	8
5	दान भावना - कर्नाटक की लोक कथा	9
6	राजभाषा और राष्ट्रभाषा में अंतर	10
7	भूकंप-एक व्यापक विश्लेषण (तकनीकी लेख)	11
8	गूगल वॉइस टाइपिंग	15
9	बदल गई राजो - कश्मीर की लोक कथा	16
10	मेरी पहली नौकरी (संस्मरण)	17
11	कंठस्थ	19
12	कौन है पति? - अरुणाचल प्रदेश की लोक कथा	20
13	उपलब्धियां व गतिविधियां	22
14	बुद्धि का सौदागर - गुजरात की लोक कथा	24
15	हिंदी भाषा का उज्ज्वल स्वरूप	26
16	बप्पनाडू श्री दुर्गा परमेश्वरी - एक चित्रण (लेख)	27
17	सिनेमा और समाज	29
18	चतुर बहु - हिमाचल प्रदेश की लोक कथा	30
19	न जाने क्यूँ अजीब सी है ये जिंदगी (कविता)	33
20	ठगराज - उड़ीसा की लोक कथा	34
21	विडंबना (कविता)	38
22	कमजोर ना समझो (कविता)	38
23	व्यावहारिक क्षेत्र में बढ़ते प्रयोजनमूलक हिंदी के कदम	39
24	राजभाषा हिंदी सम्बन्धी विभिन्न समितियां	44

इस ई-पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के हैं। मौलिकता एवं अन्य किसी विवाद के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे। संपादक मंडल / केआईओसीएल लिमिटेड से इसकी सहमति होना आवश्यक नही है। नि:शुल्क एवं केवल आंतरिक वितरण के लिए।

आशीर्वचन

एम वि सुब्बा राव
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक

कोरोना की चुनौतियों और वर्तमान समय में वैश्विक स्तर पर छाए संकटों के बीच केआईओसीएल लिमिटेड के राजभाषा विभाग द्वारा गृह पत्रिका के दूसरे अंक का प्रकाशन प्रसन्नता का विषय है। यह कहीं न कहीं राजभाषा के क्षेत्र में हमारी गतिविधियों के सकारात्मक दिशा में जारी रहने का बोध कराता है।

मुझे विश्वास है कि समय के साथ 'श्रीगंधा' की सुगंध का व्यापक प्रसार होगा और यह न केवल केआईओसीएल के कार्मिकों अपितु राजभाषा के क्षेत्र में प्रयासरत अन्य सभी संगठनों और व्यक्तियों के बीच भी अपनी सार्थक उपस्थिति दर्ज कराने में सफल सिद्ध होगी।

इस कामना के साथ कि केआईओसीएल की गृह पत्रिका 'श्रीगंधा' का द्वितीय अंक आप सभी में हिंदी के प्रति सकारात्मक प्रेरणा और सृजनात्मक लेखन का माध्यम बने, आप सभी को सुरुचिपूर्ण पाठन की शुभकामनाएं!

एम वि सुब्बा राव

(एम वि सुब्बा राव)

उद्बोधन

स्वपन कुमार गोराई
निदेशक (वित्त)

'श्रीगंधा' के दूसरे अंक के माध्यम से आप सभी को संबोधित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। मेरा विचार है कि हिंदी के प्रचार-प्रसार को उत्तरोत्तर बढ़ाने के लिए जरूरी है कि हम हिंदी को अपनी मूल चिंतन प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाएं। हम हिंदी में वार्तालाप करें। हिंदी में संवाद करें। लेखन में भी यथासंभव हिंदी का प्रयोग करें। हिंदी भाषा जिस तरह से भारत की विविधतापूर्ण संस्कृति को जोड़ने का कार्य करती है वह 'श्रीगंधा' के अंकों से झलके इस कामना के साथ दूसरे अंक के संपादन से जुड़े प्रत्येक सदस्य को मेरा साधुवाद।

मुझे विश्वास है कि 'श्रीगंधा' का प्रत्येक अंक अपने पिछले अंक की तुलना में बेहतर होगा और पाठकों के बीच लोकप्रियता के मानदंडों पर खरा उतर पाने में सफल सिद्ध होगा।

पत्रिका के नए अंक की शुभकामनाओं के साथ!

स्वपन

(स्वपन कुमार गोराई)

संबोधन

एस राजेंद्र
महा प्रबंधक (मानव संसाधन)

मार्च का महीना सिंहावलोकन अर्थात अपनी उपलब्धियों को मुड़कर देखने का समय होता है। इस रूप में एक वित्तीय वर्ष के रूप में अप्रैल से प्रारंभ हमारे नए संकल्पों की जाँच का समय होता है। प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तनों के लिए सदैव प्रयत्नशील रहता है। सकारात्मक परिवर्तन ही हमें नए-नए कौशलों से परिचित कराते हैं। इन कौशलों से जुड़ी गतिविधियों और बारीकियों की जानकारी हासिल कर हम अपने प्रयासों में नई ताजगी लाते हैं। इन कौशलों से जीवन की आम दिनचर्या में पर्याप्त बदलाव आता है। समय का समुचित प्रबंधन संभव हो जाता है और हम संतुष्टि के एहसास से भरे हुए जीवन का आनंद उठाने में सक्षम महसूस करते हैं।

वित्तीय वर्ष 2020-21 की शुरुआत जिस तरह से कोरोना प्रभावित रही है उसकी चुनौतियों को स्वीकार करते हुए हमने अपना अधिकांश काम-काज ऑनलाइन माध्यमों से करने के कौशल का विकास किया और ऑनलाइन माध्यमों का उपयोग करते हुए अब एक सुविधाजनक कार्य संपादन की स्थिति में हैं।

'श्रीगंधा' के दूसरे अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। कामना है 'श्रीगंधा' अपने रंग रूप और विविधतापूर्ण रचनाओं के माध्यम से आप सभी को सुरुचिपूर्ण पाठन का आनंद प्रदान करे, साथ ही राजभाषा की प्रगामी प्रगति में अपना सार्थक योगदान देने में सफल सिद्ध हो।

एक नए अंक के माध्यम से शीघ्र ही आप सभी से मिलने के वादे के साथ अपील है कि आप सभी भारत सरकार द्वारा जारी स्वास्थ्य संबंधी दिशानिर्देशों का पालन करते हुए अपनी सकारात्मकता, सृजनात्मकता और उत्पादकता को सतत जारी रखें।

एस राजेंद्र
(एस राजेंद्र)

संपादकीय

एस रजनीश कुमार
उप प्रबंधक (राजभाषा)

हिंदी पखवाड़ा की उपलब्धियों और गतिविधियों को सहेजे हुए केआईओसीएल की ई-गृह पत्रिका 'श्रीगंधा' के परिशिष्टांक को छोड़ सामान्य अंक के रूप में इस दूसरे अंक के माध्यम से आप सभी से एक छोटी अवधि में फिर से जुड़कर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

इस अंक का ताना-बाना जोड़ने, सहेजने और अपनी ग्रामीण संस्कृति के तत्वों को फिर से जानने की दिशा में हमें ले जाता है। यह कहीं न कहीं वैश्विक महामारी के बीच में भी उस सकारात्मकता से हमारा परिचय कराता है जिसके दम पर ही आज जिजीविषा बनी हुई है। आंतरिक प्रेरणा प्राप्त हो रही है और हम आत्म-चिंतन और आत्म-परिष्कार के उस दौर से गुजर रहे हैं जिसका परिणाम सुखद ही होने की कामना है।

इस अंक के माध्यम से हम भारत के विभिन्न राज्यों की लोककथाओं की पुनर्प्रस्तुति कर रहे हैं। इन रचनाओं के माध्यम से लोक जीवन की विशिष्टताओं, भौगोलिक व मानवीय तत्वों के ज्ञान और लैंगिक समानता, सामाजिक स्तरीकरण, प्रकृति से जुड़ाव जैसे तथ्यों से साक्षात्कार होता है। साथ ही इन लोककथाओं के माध्यम से भारत की विविधरंगी सांस्कृतिक विरासत से हमारा परिचय होता है, जो सही अर्थों में कश्मीर से कन्याकुमारी और कोहिमा से कच्छ तक फैले भारत के विशाल भूसांस्कृतिक जगत में हमारे प्रवेश का रास्ता तैयार करती है।

कोविड 19 की वैश्विक महामारी ने शारीरिक दूरी बनाए रखने की बाध्यता के साथ ही सांचारिक नजदीकी की सुविधा भी प्रदान की है और एसएमएस, व्हाट्सऐप जैसे संचार विकल्पों के बाद अब वेबिनार जैसे माध्यम से एक बड़े मंच पर अपने को प्रस्तुत करना प्रचलन में है। इन सभी माध्यमों में भाषिक सहुलियत का होना एक और बड़ी बात है और इन माध्यमों का हम हिंदी सहित अपने पसंद की अधिकांश भारतीय भाषाओं में सहजता से प्रयोग कर सकते हैं। राजभाषा कार्यान्वयन की दृष्टि से भी इसका व्यापक सरोकार है।

चलते-चलते, उम्मीद है कि श्रीगंधा के इस अंक के माध्यम से सहेजे जा रहे हमारे प्रयास से जुड़ी आपकी प्रतिक्रिया हमें अवश्य प्राप्त होगी। आपकी प्रतिक्रियाएं हमारा मार्गदर्शन करती हैं और हम बेहतर से बेहतरीन के लिए प्रयासरत रहने का हौसला बरकरार रखते हैं। एक नए अंक के माध्यम से आप सभी से शीघ्र ही मिलने की कामना के साथ आप सभी को स्वास्थ्यपूर्ण स्थिति में सुरुचिपूर्ण पाठन की शुभकामनाएं।

रजनीश कुमार

(एस रजनीश कुमार)

दान भावना : कर्नाटक की लोक-कथा

मंजूनाथ नाम का एक बालक अपनी दादी के साथ एक नए गाँव में रहने आया। वे दोनों गाँव के साहूकार के पास पहुँचे। साहूकार अपनी तोंद फुलाए कुरसी पर बैठा था। दादी और पोते ने साहूकार को प्रणाम किया।

दादी ने उससे कहा, "मालिक! हम दूसरे गाँव से आए हैं। अब यहीं रहना चाहते हैं। आप हमें सिर छिपाने की जगह दे दें। बदले में हम आपके घर के काम कर देंगे।"

साहूकार ने मन में सोचा-- 'बिना दाम के दो मज़दूर मिल रहे हैं। इन्हें क्यों छोड़ा जाए?' वह मान गया। उसने घर के पिछवाड़े उन्हें रहने की जगह दे दी।

दादी ने पूछा, "साहूकार जी! इसका किराया क्या लगेगा?"

साहूकार ने झट से बताया, "मेरे घर में चार भैंसें, तीन बैल और चार गायें हैं। उन सबको चराना होगा। उनके गोबर को पाथकर उपले बनाने होंगे और उपले बेचकर उनके पैसे मुझे देने होंगे। वही उसका किराया होगा।"

दादी और पोते ने साहूकार की शर्त मान ली।

उसी दिन से दादी तो साहूकार के घर का काम करने लगी और पोते ने गाँव में ही कोई काम ढूँढ़ लिया। उनका जीवन चलने लगा।

एक दिन की बात है। साहूकार के दरवाज़े पर फटेहाल एक भिखारी आ गया। साहूकार ऊँची आवाज़ में बोला, "चलो-चलो, आगे बढ़ो! मेरे पास कुछ नहीं है।"

वह भिखारी घूमकर पिछवाड़े की ओर आ गया। दादी को उस पर दया आ गई। घर में जो खाना बना हुआ रखा था, वह उसने भिखारी को दे दिया।

विदा होने से पहले भिखारी दादी की हथेली पर एक दमड़ी रखते हुए बोला, "माँ, तुम इससे अपने पोते के लिए मुरमुरे खरीद लेना।"

दादी ने उस दमड़ी को अपनी संदूकची में रख दिया। वह सोच में थी कि आज अपने पोते को क्या खिलाएगी! तभी उसका पोता खेत से आया। वह भूखा था। दादी ने पोते को सारी बात बताई और कहा, "संदूकची में से दमड़ी लेकर कुछ खरीद ला।"

जैसे ही पोते ने संदूकची खोली, सोने की चमक से सारी झोंपड़ी जगमगा उठी।

उन्होंने सोना बेचकर सुंदर मकान बनाया, ज़मीन खरीदी, बैल खरीदे और बड़े किसान बन गए।

उनकी समृद्धि देखकर सेठ ने सोचा, 'काश, मैंने उस भिखारी को न भगाया होता।'

एक दिन वही भिखारी फिर उसके द्वार पर आया जिसे बहुत समय पहले उसने भगा दिया था। साहूकार दौड़कर बाहर आया। भिखारी को सम्मान के साथ अंदर ले गया। इसके बाद थाली में छप्पन व्यंजन सजाकर उसके

सामने ले आया। मुसकराते हुए भिखारी ने छककर भोजन किया। जाते हुए वह साहूकार को भी एक दमड़ी दे गया।

दमड़ी हाथ में आते ही साहूकार की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने दमड़ी को बड़े जतन से अपनी तिजोरी में रखकर ताला लगा दिया।

उस रात उसे नींद नहीं आई। वह बार-बार तिजोरी के पास आता और फिर बिस्तर पर लेट जाता। इस तरह पूरी रात घूमते हुए बीती।

पौ फटते ही साहूकार तिजोरी खोलने आया। सोना मिलने की खुशी में उसने अपनी आँखें बंद कर ली थीं। वह सोच रहा था कि उसकी पूरी तिजोरी जगमग कर रही होगी। लेकिन यह क्या! हुआ तो बिलकुल उलटा। उसकी तिजोरी में रखा हुआ धन कोयला बन चुका था!

साहूकार समझ गया कि यह सब करनी का फल है। दादी ने निस्स्वार्थ भाव से भिखारी को भोजन कराया था, इसलिए उन्हें वैसा ही फल मिला। उसने लालच में आकर भिखारी को भोजन दिया था सो ऐसा फल मिला।

इसके बाद से साहूकार का व्यवहार हमेशा के लिए बदल गया। दादी और पोते ने उसे अच्छा सबक सिखा दिया।

-श्रीगंधा फीचर डेस्क

राजभाषा और राष्ट्रभाषा में अंतर

- राजभाषा एक संवैधानिक शब्द है , जबकि राष्ट्रभाषा स्वाभाविक रूप से सृजित शब्द। इस प्रकार राजभाषा प्रशासन की भाषा है तथा राष्ट्रभाषा जनता की भाषा।
- समस्त राष्ट्रीय तत्वों की अभिव्यक्ति राष्ट्रभाषा में होती है, जबकि केवल प्रशासनिक अभिव्यक्ति राजभाषा में होती है।
- राजभाषा की शब्दावली सीमित है, जबकि राष्ट्रभाषा की शब्दावली विस्तृत।
- राजभाषा, नियमों से बंधी होती है, जबकि राष्ट्रभाषा स्वतंत्र या मुक्त प्रकृति की होती है।
- राजभाषा में शब्दों का प्रवेश, निर्माण अथवा अनुकूलन (विशेषकर तकनीकी प्रकृति के शब्दों का) विद्वानों एवं विशेषज्ञों की समिति की राय से किया जाता है, जबकि राष्ट्रभाषा में शब्द समाज से आते हैं तथा प्रचलन के आधार पर रूढ़ होकर मान्यता प्राप्त करते हैं। इसके निर्माण में सभी का हाथ होता है।
- राजभाषा, हिंदी भाषा का प्रयोजन मूलक रूप है इसलिए तकनीकी सृजन है। जबकि राष्ट्रभाषा, हिंदी भाषा का स्वाभाविक तथा पारंपरिक रूप है।
- राजभाषा के प्रयोग का क्षेत्र सीमित होता है, जबकि राष्ट्रभाषा का क्षेत्र इतना व्यापक कि उसका व्यवहार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी होता है।

-श्रीगंधा फीचर डेस्क

भूकंप - एक व्यापक विश्लेषण (तकनीकी लेख)

श्रीप्रकाश

भूकंप का अर्थ :

भूकंप भूपटल की कम्पन अथवा लहर है, जो धरातल के नीचे अथवा ऊपर चट्टानों के लचीलेपन या गुरुत्वाकर्षण की समस्थिति में क्षणिक अव्यवस्था होने पर उत्पन्न होती है।

भूकंप की तीव्रता को रिक्टर मापक पर प्रकट किया जाता है। भूकंप को नापने वाले यन्त्र को सीस्मोग्राफ कहते हैं । प्रत्येक वर्ष लगभग 507,150 भूकंप रिकॉर्ड किये जाते हैं, जिनमें से केवल 50,000 को ही मानव महसूस कर पाता है।

भूकंप के कारण:

भूकंप आने के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं:

1. प्लेट विवर्तनिकी :

भूकंप प्लेट्स के विस्थापन होने से आता है दरअसल धरती के भीतर कई प्लेटें होती हैं जो समय-समय पर विस्थापित होती हैं। इस सिद्धांत को अंग्रेजी में प्लेट टैक्टॉनिकक और हिंदी में प्लेट विवर्तनिकी कहते हैं।

इस सिद्धांत के अनुसार पृथ्वी की ऊपरी परत लगभग 80 से 100 किलोमीटर मोटी होती है जिसे स्थलमंडल कहते हैं। पृथ्वी के इस भाग में कई टुकड़ों में टूटी हुई प्लेटें होती हैं जो तैरती रहती हैं। सामान्य रूप से यह प्लेटें 10-40 मिलिमीटर प्रति वर्ष की गति से गतिशील रहती हैं। हालाँकि इनमें कुछ की गति 160 मिलिमीटर प्रति वर्ष भी होती है। प्लेटें आपस में टकराती हैं तो इससे पृथ्वी विस्थापित होती है जब भी यह प्लेटें गतिशील होती हैं तो यह आपस में टकराती हैं। इन प्लेटों के टकराने से ही तरंगे पैदा होती हैं। यही नहीं इन्हीं प्लेटों के एक-दूसरे से टकराने के बाद यह एक दूसरे के उपर चढ़ने लगती हैं जिसके परिणामस्वरूप ज्वालामुखी उत्पन्न होता है।

प्लेट टैक्टॉनिक के इस सिद्धांत के अनुसार हमारी धरती की ऊपरी परत के रूप में स्थित स्थलमण्डल, जिसमें क्रस्ट और ऊपरी मैंटल का कुछ हिस्सा शामिल है, कई टुकड़ों में विभाजित हो जाता है जिन्हें प्लेट कहा जाता है। मुख्य रूप से 7 प्लेटें देती हैं भूकंप को अंजाम सामान्यतया इन प्लेटों में बड़ी प्लेटों की संख्या सात मानी जाती है। इसके अलावा कुछ सामान्य और कुछ छोटे आकार की प्लेट्स भी होती हैं।

ये प्लेट्स मुख्य रूप से अफ़्रीकी प्लेट, यूरेशियाई प्लेट, उत्तर अमेरिकी प्लेट, दक्षिण अमेरिकी प्लेट, प्रशांत प्लेट, हिन्द-ऑस्ट्रेलियाई प्लेट, अंटार्कटिक प्लेट्स हैं। सिस्मिक तरंगें हैं भूकंप की मुख्य वजह भूकंप पृथ्वी की परतों के आपस में टकराने से उत्पन्न हुई उर्जा के कारण आता है। उन प्लेटों के टकराने से सिस्मिक तरंगे उत्पन्न होती हैं जो भूकंप का मुख्य कारण हैं। इसी के चलते भूकंप को रिकॉर्ड करने के लिए सीस्मोमीटर का इस्तेमाल किया जाता है, लिहाजा भूकंप के अध्ययन को सीस्मोग्राफी कहा जाता है। भूकंप को मापने के लिए रिक्टर स्केल का प्रयोग किया जाता है। तीन या इससे कम रिक्ट स्केल के भूकंप से अक्सर कोई नुकसान नहीं होता है। लेकिन सात से उपर के तीव्रता के भूकंप तबाही ला सकते हैं, जैसा की नेपाल में देखा गया है। वहीं जब प्लेट समुद्र के किनारे आपस में टकराती हैं तो यह सुनामी जैसे भीषण आपदा को उत्पन्न करती हैं।

2. ज्वालामुखी उद्गार:

ज्वालामुखी उद्गार भूकंप के मुख्य कारणों में से एक हैं। ऐसे भूकंप या तो ज्वालामुखी उद्गार के साथ ही आते हैं अथवा भूकंप उद्गार से पहले आते हैं।

3. वलन एवं भ्रंश :

भूगर्भीय हलचल के कारण, भूपटल की परतों में हलचल उत्पन्न होती है तथा वलन एवं भ्रंश पड़ते हैं। वलन एवं भ्रंश पड़ने से चट्टानें टूटती हैं तथा भूकंप आते हैं।

4. मानवीय कारण:

मानव पृथ्वी के भूपटल से खनिजों तथा पत्थरों का खनन करता है नदियों पर बाँध बनाकर जलाशय बनाता है तथा जंगलों को काटता है। यह खनन नीचे धंस जाए तो भू-पटल में कम्पन उत्पन्न होता है। बाँध के जलाशयों के भार से भी भूपटल का संतुलन बिगड़ता है जिससे भूकम्प आते हैं। सतारा जिले (महाराष्ट्र) में कोयल बाँध के जलाशय के भार (1967) के कारण भारी भूकंप आया था। जाम्बिया में करीबा बाँध, रूस के नुरेक बाँध और यूनीन के मेराथन बाँध, (1931) में इस प्रकार के भूकंप रिकॉर्ड किये गये हैं।

भारत के भूकंप क्षेत्र :

भारत के अधिकार भूकंप हिमालय, कच्छ (गुजरात) तथा उत्तर-पूर्वी भारत की पर्वतमालाओं में आते हैं। दूसरे नम्बर पर उत्तरी भारत के मैदान का नम्बर है। तुलनात्मक रूप से दक्षिण प्रायद्वीप, छोट-नागपुर का पठार बुन्देलखण्ड, बघेलखण्ड तथा छत्तीसगढ़ में भूकंप कम आते हैं।

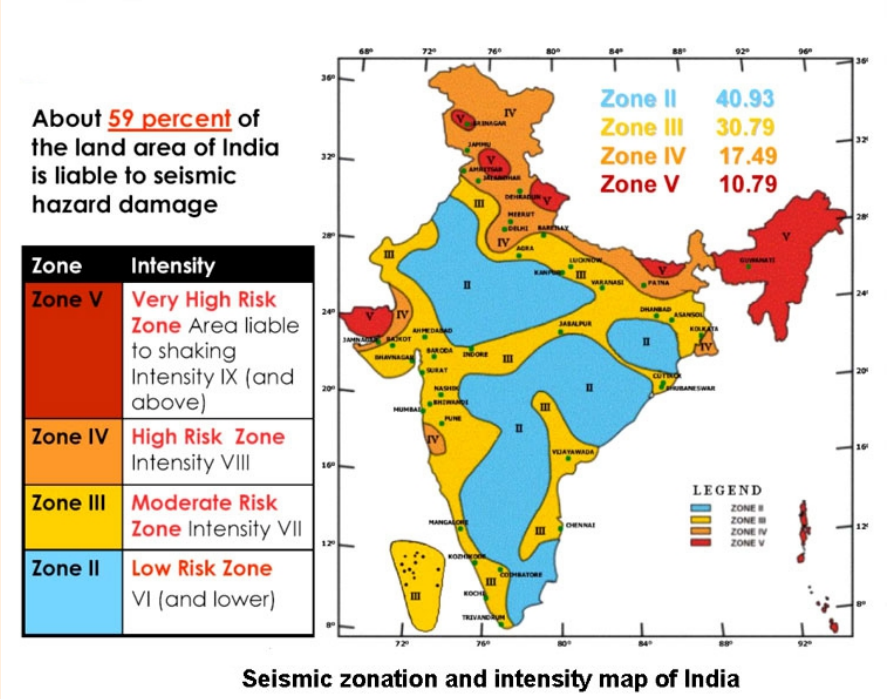

Seismic zonation and intensity map of India

भूकम्पों का प्रभाव :

भूकम्पों से मानव समाज को सदैव ही भारी जान माल का नुकसान हुआ है।

भूकम्पों से मानव-समाज एवं पारिस्थितिकी को निम्न प्रकार की हानि होती है:

(I) भू-आकृतियों में परिवर्तन- 1819 के भूकंप के कारण भुज (गुजरात) में अल्लाह बंध की रचना हो गई थी।

(ii) बड़े भूकम्पों से भारी जान माल का नुकसान होता है। हाल के वर्षों की दुनिया के प्रमुख भूकंपों के कुछ उदाहरण, देखिये तालिका:

(iii) भवनों, घरों, राजमार्गों, रेल की पटरियों, पुलों तथा नगरों को भारी हानि होती है।

वर्ष	दिनांक	स्थान	मृत्यु	तीव्रता
2004	24 दिसम्बर	सुमात्रा, इंडोनेशिया	>200,000	8.5
2011	23 अक्टूबर	तुर्की	>1000	7.2
2011	18 सितंबर	सिक्किम, भारत	>500	6.8
2011	11 मार्च	तोहाकू, जापान	>25000	9
2012	11 अगस्त	पूर्वी अज़रबैजान प्रांत, ईरान	>720	6.4
2013	25 सितंबर	पाकिस्तान	>300	7.7
2014	03 अगस्त	चीन	>600	6.1
2015	25 अप्रैल	नेपाल	>800	7.8
2016	24 अगस्त	मध्य इटली	>298	6
2017	19 सितंबर	मेक्सिको सिटी	>369	7.1
2017	12 नवंबर	ईरान-इराक सीमा	440	7.3
2018	15 अगस्त	इंडोनेशिया	460	6.9
2019	25 सितंबर	इंडोनेशिया	>41	6.5
2020	30 अक्टूबर	तुर्की, ग्रीक द्वीप समूह	> 22	7

(iv) वर्ष 1935 में क्वेटा में भूकंप से बहुत से भवन नष्ट हो गए थे और लगभग 25,000 लोगों की जानें गई थी। गुजरात के भुज इलाके में 26 जनवरी, 2001 को बहुत ही भयंकर भूकंप आया था जो रिक्टर पैमाने पर 7।9 मापा गया था। इस भूकंप के झटके भारत, पाकिस्तान और नेपाल में भी महसूस किए गए थे। इस भूकंप के कारण लगभग 1 लाख लोगों की जानें गई थी और बहुत-से नगर मलबे के ढेर बन गए थे। महासागरों में बड़े भूकंप आने से सुनामी आ जाती हैं। सुमात्रा के 2004 के भूकंप के परिणामस्वरूप आई सुनामी में दो लाख से अधिक

व्यक्तियों की जान गई थी।

(v) बहुत-से स्थानों पर भूपटल नीचे धंस जाता है या ऊपर उठ जाता है।

(vi) भूकंप आने पर शॉर्ट सार्किट के कारण नगरों में आग लग जाती है तथा पानी के पाईप फट जाने से नगरों की गलियों में पानी भरने से बाढ़ जैसी परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है।

(vii) कई बार भूकंप के कारण नदियों के मार्ग में रुकावट पड़ जाती है और उनका प्रवाह रुक जाता है। जिसके कारण नदी का जल आस-पास के इलाकों में फैल जाता है और बाढ़ आ जाती है। वर्ष 1950 में असम में आए भूकंप से ब्रह्मपुत्र तथा उसकी सहायक नदियों में इसी प्रकार बाढ़ आई थी।

(viii) जब समुद्री भाग में भूकंप आता है तो बड़ी-बड़ी लहरें उठती हैं, जिससे जलयानों को भारी क्षति पहुंचती है। इसके अलावा तटीय भागों में समुद्री जल फैलकर भारी नुकसान पहुंचाता है। समुद्र में भूकंप आने से सुनामी उत्पन्न होती है, जिसका विकराल रूप 2004 में हिन्द महासागर में देखने को मिला था।

(ix) भूकंप के कारण भू-पटल पर बड़े-बड़े भ्रंश पड़ जाते हैं, जिससे यातायात में बाधा उत्पन्न होती है। वर्ष 1891 में जापान में आए भीषण भूकंप ने चौड़ी घाटियों के तल पर बनी कई सड़कों को नष्ट कर दिया था। वर्ष 1906 में कैलिफोर्निया में आए भूकंप से सैकड़ों किलोमीटर विशाल भ्रंश का निर्माण हो गया था।

(x) भूकंप के कारण पर्वतीय क्षेत्रों में काफी भू-स्खलन होता है, जिससे काफी क्षति होती है।

भूकंप से लाभ :

(i) भूकंपीय तरंगों से हमें भू-गर्भ का ज्ञान प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

(ii) भूकंप के कारण भू-स्खलन की क्रिया होती है जो अपक्षय में सहायक होती है। इससे मिट्टी के निर्माण में सहायता मिलती है और कृषि को प्रोत्साहन मिलता है।

(iii) भूकंप के कारण भू-पटल पर बड़े पैमाने पर बलन या भ्रंश पड़ जाते हैं, जिससे पर्वत, पठार, घाटियां आदि कई नई स्थलाकृतियों का जन्म होता है।

(iv) समुद्र तटीय भागों में भूकंप आने से कई बार तटीय भाग नीचे धंस जाते हैं और गहरी खाड़ियों का निर्माण होता है। इनसे अच्छे सुरक्षित बंदरगाह का निर्माण होता है जो व्यापार में सहायक होते हैं। इसके विपरीत कई बार भूकंप के कारण बहुत सारे जलमग्न भाग समुद्र से बाहर आ जाते हैं और नए स्थलीय भाग का निर्माण होता है।

(v) भूकंपों के कारण धरातल पर बड़ी-बड़ी दरारें पड़ जाती हैं जिससे कई खनिज पदार्थ सुगमता से मिल जाते हैं।

(vi) भूकंप के कारण भू-भागों के धंसने से बड़े-बड़े झीलों का निर्माण होता है जो मनुष्य के लिए उपयोगी सिद्ध होते हैं।

(vii) कई बार भूकंपीय भ्रंशों से जल-स्रोतों का जन्म होता है जो मनुष्य के लिए लाभकारी साबित होते हैं।

भूकम्पों की भविष्यवाणी:

भूकम्पों के बारे में अभी तक वैज्ञानिक ढंग से भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। केवल पशुओं के व्यवहार के आधार पर ही कभी-कभी भविष्यवाणी की जा सकी है। 1975 में चीन के हैचांग नगर में एक विश्वसनीय भविष्यवाणी की गई थी।

भूकंप से पहले पानी में रहने वाली बतखें पानी से बाहर आ गई, साँप अपने बिलों से निकलकर बाहर आ गये, कुत्ते भौंकने लगे, मछलियाँ पानी से बाहर निकलकर रेत पर उछलने लगीं तथा कुओं का पानी दो तीन मीटर ऊपर चढ़ गया। इन लक्षणों को देखकर भूकंप की भविष्यवाणी की गई तथा लोगों को चेतावनी देकर मैदानों एवं खुले उद्यानों में आने का सुझाव दिया गया। मैदानों में भोजन तथा मनोरंजन के प्रबन्ध किये गये। दूसरे दिन भारी भूकंप आया सारा नगर ध्वस्त हो गया परन्तु लोगों की जान बच गई। इसके विपरीत 1976 में त्येनशान नगर में अचानक भारी भूकंप आया जिसमें ढाई लाख से अधिक लोग क्षण भर में मौत के घाट उतर गये और नगर खण्डहर में बदल गया।

-श्रीप्रकाश, उप महा प्रबंधक

(तकनीकी अधिकारी, समन्वय एवं निगमित संचार)

गूगल वॉइस टाइपिंग

अपनी आवाज के साथ आप टाइप कर सकते हैं। यह सुविधा क्रोम ब्राउज़र में उपलब्ध है।

सबसे पहले यह सुनिश्चित करें की आपके कंप्यूटर से एक माइक्रोफोन जुड़ा हुआ है और वह काम करता है, तथा एक जी-मेल का यूजर आईडी-पासवर्ड होना जरूरी है।

1. Chrome ब्राउज़र में http://docs.google.com ओपन करें। जी-मेल आईडी से लोगिन करें।

2. गूगल डॉक्स में एक नया दस्तावेज़ खोलें।

3. उपकरण (Tools) मेनू > वॉइस टाइपिंग (Voice Typing) पर क्लिक करें। पॉप-अप माइक्रोफोन बॉक्स से भाषा (हिंदी) का चयन करे।

4. आप पाठ में बोलने के लिए तैयार हैं, तो माइक्रोफोन बॉक्स पर क्लिक करें।

5. सामान्य गति और वोल्यूम से स्पष्ट रूप से अपना पाठ बोलें।

6. रोकने के लिए माइक्रोफोन पर पुन: क्लिक करें।

वॉइस टाइपिंग की गलतियों में सुधार

आवाज के साथ टाइप करते हुए अगर गलती हो जाए तो गलती पर कर्सर ले जाकर और माइक्रोफोन से पुन: बोल कर ठीक कर सकते हैं। गलती सुधारने के बाद, आप आवाज टाइपिंग जारी रखना चाहते हैं, वहां कर्सर वापस ले जाएं।

-श्रीगंधा फीचर डेस्क

बदल गई राजो: कश्मीर की लोक-कथा

एक गाँव में रहती थी राजो बुढ़िया। वह घर में अकेली थी। पति की मृत्यु हो गई थी और बाल-बच्चे भी न थे।

राजो के आँगन में सेब और अखरोट के बहुत-से पेड़ थे। राजो दिनभर भगवान शिव की पूजा करती थी। सेब और अखरोट बेचकर अच्छी गुजर-बसर हो जाती थी।

राजो को बच्चों से बहुत नफरत थी। बच्चों को देखते ही वह डंडा लेकर मारने दौड़ती। बच्चे भी उसे बहुत चिढ़ाते थे। एक दिन राजो ने बहुत-सारे पत्थर इकट्ठे कर लिए और मन-ही-मन सोचा-

'ज्यों-ही कोई बच्चा अखरोट तोड़ने आएगा, मैं उसे पत्थर मार दूँगी।'

सुबह से दोपहर, दोपहर से शाम हो गई पर कोई बच्चा नहीं आया। बुढ़िया ने हारकर पत्थर सँभाल दिए। तभी अँधेरे में एक परछाईं दिखाई दी। राजो ने पत्थर खींचकर दे मारा। पत्थर ठीक निशाने पर लगा। वह बच्चा अखरोट चुराने आया था।

माथे से बहते लहू को पोंछकर वह वापिस चला गया। राजो को बहुत खुशी हुई कि चलो एक दुश्मन तो कम हुआ।

उसी रात सपने में उसने देखा कि भगवान शंकर दिव्य रूप में विराजमान हैं और उनके माथे से खून बह रहा है। माता पार्वती खून बहने का कारण पूछती हैं तो वे कहते हैं, मेरी एक भक्तिन ने बच्चे को चोट पहुँचाई। वही दर्द मुझे हो रहा है। वह मूर्ख यह नहीं जानती कि बच्चों में ही ईश्वर का निवास होता है। वे ही भगवान के रूप हैं।

यह सपना देखते ही राजो की आँखें खुल गईं। उसे बहुत पश्चात्ताप हुआ। मारे दुख के वह बीमार पड़ गई।

अगली सुबह गली के बच्चों ने देखा कि राजो बुढ़िया चुप है। गालियों की आवाज भी नहीं आ रही है। वे सब राजो से बहुत प्यार करते थे।

एक बच्चा डरते-डरते भीतर गया। बुढ़िया बुखार में तप रही थी। वह भागकर वैद्यजी को बुला लाया। कोई अपने घर से खिचड़ी बनाकर लाया तो किसी ने घर की सफाई कर दी।

राजो चुपचाप बिस्तर पर पड़ी आँसू बहाती रही। वह जान गई थी कि सच्चा सुख मिलकर जीने में ही आता है। वे बच्चे, जो कल तक उसे चिढ़ाते थे, आज जी-जान से सेवा कर रहे थे।

कुछ ही दिनों में राजो भली-चंगी हो गई। हाँ, अब वह राजो बुढ़िया नहीं रही थी। सभी बच्चे प्यार से राजो अम्मा कहने लगे थे।

-श्रीगंधा फीचर डेस्क

मेरी पहली नौकरी

अजीत कुमार

शायद यह आज की नहीं, वर्षों पहले की समस्या रही है। बेरोजगारी की मार हर किसी की जिंदगी में लगभग आती ही आती है। भले अवधियों का फर्क रहा हो। किसी के लिये छः महीने,तो किसी के लिये साल दो साल या फिर कुछ अति दुर्भाग्यशालियों के लिये पांच या दस साल भी। यही वह समय है जिसमें युवाओं को सबसे अधिक जमीनी हकीकत का अनुभव प्राप्त होता है।यथार्थ का प्रत्यक्ष दीदार हो जाता है। जिंदगी बोझ सी लगने लगती है। रिश्तेदारों से बचने,भागने,दूर रहने की इच्छा आने लगती है। कहीं वही सवाल फिर से पूछ न लें-तुम्हारी नौकरी का क्या हुआ? मां-बाप अलग परेशान। किसी तरह पढ़ाई पूरी करवायी, उम्मीद थी अंतिम वर्ष तक कहीं न कहीं नौकरी हो ही जायेगी परंतु यह क्या महीने,छः महीने गुजरते-गुजरते साल दो साल हो आए तो धैर्य का टूटना तो जायज ही है। मध्यमवर्गीय अभिभावक आखिर कब तक खर्च वहन करें।

बारहवीं पास करने के अगले वर्ष ही इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा में सफलता मिल गयी। सरकारी कॉलेज में दाखिला। एक डेढ़ लाख प्रतिभागियों में लगभग एक हजार का चयन प्रवेश के लिये हुआ था। फिर क्या था सपनों की उड़ान आगे निकल पड़ी। देखते - देखते चार साल कैसे बीत गए पता ही नहीं चला। प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण। कॉलेज उतना नामी गिरामी तो था नहीं कि कैम्पस इंटरव्यू होता। सारे प्रमाण पत्र लेकर वापस घर आ गया।

पास करने के बाद प्रतियोगी परीक्षाओं में फार्म भरने, डीडी जमा करने, दूसरे शहरों में सेंटर लेकर परीक्षा में बैठना एक अलग ही खर्चीली प्रक्रिया थी। बड़े शहरों में होटल में रुकना, आने जाने का खर्च आदि,आदि..। हर एक महीने करीब एक या फिर दो फार्म भरना, फिर परीक्षा में बैठना जारी ही था। इतने के बाद फिर वही लिखित परीक्षा के रिजल्ट में अपना क्रमांक सं.का अदृश्य ही रहना। घर पर रहकर अच्छी तैयारी नहीं हो पा रही थी। थक हार कर पहले पटना, फिर दिल्ली का रूख किया। शायद दोस्तों के साथ ग्रुप में अच्छी तैयारी हो जाए। ऐसा सोचना रहा होगा।

फिर से खर्च शुरु। घर से हर एक माह पैसा मनीआर्डर द्वारा मंगवाना। कुछ महीने बाद ही पिताजी की चिट्ठी या फोन पर डांट फटकार शुरू, कब तक तुम्हारे पर ही खर्च करते रहें। तुम्हारे बाकी भाई-बहनों को भी देखना है। अगले महीने से मुझसे नहीं होगा,अपना बंदोबस्त खुद करो। अब मेरे वश का नहीं आदि आदि...। आखिर हमने भी अब प्राइवेट ही सही किंतु कोई भी नौकरी लेने के लिये कमर कस ली। साथ में मेरा मित्र प्रमोद झा भी किसी प्राइवेट नौकरी को छोड़कर दूसरी नौकरी की तलाश में दिल्ली आ चुका था। फिर तो एक से भले दो। नौकरी पाओ अभियान शुरू। इसी बेरोजगारी के बीच मेरी शादी भी एक बेहद सुंदर, सुशील कन्या शशि कुमारी जी से हो गई। पत्नी भी एम.ए. की पढाई अपने मायके में ही रहकर कर रही थी। शादी का फायदा ये मिला कि दिल्ली में मुझे ठहरने एवं खाने पीने का मुफ्त प्रबंध हो गया। बड़े साले साहब संजय जी दिल्ली में ही नौकरी कर रहे थे। उन्हीं के नोएडा आवास पर रुककर मेरा नौकरी के लिये प्रयास शुरू हो गया।

शायद साल 1993 रहा होगा। उस समय दिल्ली में मेट्रो शुरू नहीं हुआ था। डीटीसी या फिर राष्ट्रीय राजधानी

क्षेत्र (एन सी आर) के लिये हरियाणा रोडवेज या फिर यूपी रोडवेज की बसें लेनी पड़ती थी। ये बसें खचाखच भरी रहती थी। अगर आपको ठीक से खड़े रहने की भी जगह मिल गयी तो अपने को भाग्यशाली समझें, अगर सीट मिल गयी फिर तो मानिये आपको कोई गड़ा खजाना मिल गया।

खैर पहली बार मैंने फोर्सड एप्लीकेशन का नाम सुना था, जिसका शाब्दिक अर्थ "जबरदस्ती आवेदन पत्र" ही उचित रहेगा। यह ज्ञान मुझे मेरे प्रिय मित्र प्रमोद झा से ही प्राप्त हुआ था। दिल्ली, नोएडा, ग्रेटर नोएडा की सभी छोटी बड़ी कंपनियों में रोज घुम घुमकर अपना बायोडाटा सुरक्षा गार्ड के हाथों जबरदस्ती थमाना। कुछ लोग प्यार और इज्जत से भी पेश आते थे। कभी- कभी लगता था ये गार्ड्स हमसे बेहतर स्थिति में हैं। इतना पढ़ लिखकर क्या फायदा? खैर एक दो महीने इधर उधर धक्के खाने के बाद भी कहीं से काल या फिर ज्वाइनिंग नहीं आई।

एक दिन हमेशा की तरह डीटीसी की बस में ग्रेटर नोयडा की तरफ चल दिया था। उस दिन हमारी किस्मत अच्छी थी। थ्री सीटर में से दो सीट पर हम दोनों जुझारु विराजमान हो चुके थे। तीसरी सीट पर कोई और अनजान सहयात्री। सामने अगल बगल दसों सज्जन अपनी अपनी हाथ उपर उठाए बस की हैंड सपोर्ट पाइप पर लटके हुए। उनकी चौकन्नी नजरें हरेक यात्रियों के भावों को भांपती हुई कि बैठे हुए लोगों में कोई उतरने वाला पार्टी तो नहीं? दो तीन स्टाप के बाद ही साथ वाले सज्जन ने उतरने की सुगबुगाहट दिखाई। मैं काफी सतर्क। मेरी नजर सामने ही पाइप पर लटके हुए अधेड़ उम्र के एक सज्जन पर थी। अंदर से मन में आ रहा था कि इनको बैठा लिया जाए। पढ़े लिखे लग रहे थे। बगल वाले का सीट से खड़ा होते ही मैंने उसकी सीट पर खिसककर जगह ले ली और उस सज्जन को सीट पर आने का इशारा किया। सीट पाकर वे काफी खुश। बातचीत के दौरान पता चला वे किसी कंपनी में मैनेजर हैं। बिहार के ही हैं। हमारे सफर का भी प्रयोजन उन्होंने पुछा। हमने बताया हम नौकरी की तलाश में हैं और अपना बायोडाटा कंपनियों में देने जा रहे हैं। बातचीत करते करते उनका स्टाप आ गया। उतरने से पहले उन्होंने मुझे धन्यवाद दिया और अपना विजिटिंग कार्ड थमा दिया। बातचीत के क्रम में उन्होंने बता दिया था कि उनके यहां भी इंजीनियर की वैकेंसी है, चाहें तो आ सकते हैं। बात आयी गयी हो गयी। फिर से हम दोनों दोस्त मस्त।

कालांतर में 8-10 जगह इंटरव्यू में छंटाने के बाद हमारा दिमाग ठिकाने पर आ चुका था। तभी मुझे एक दिन बस वाले सज्जन की याद आ गई। फिर क्या था,लगे उनका कार्ड ढूंढने। संयोग से कार्ड मिल गया। तैयार होकर निकल पड़े बस स्टाप की तरफ। इस बार मैं चुपके से दोस्त को बिना बताए कार्ड के पते से उनके फैक्टरी तक पहुंच गया। रास्ते में डर भी लग रहा था कि झा जी मुझसे पहले तो वहां नहीं पहुंच गये? क्योंकि कार्ड उसके पास भी था।

खैर पहुंचते ही गेट पर कार्ड दिया और बताया कि प्रसाद साहब से मिलना है। पता चला साहब अभी आये नहीं हैं। आधे घंटे बाद ही दरबान का बुलावा आया कि साहब आ चुके हैं, आपको बुला रहे हैं। अंदर गया तो पता चला वही साहब इंटरव्यू लेंगें। फिर क्या था? तुरंत सेलेक्शन। अगले दिन से ही काम पर आने के लिए कह दिया।

उस दिन खुशी का ठिकाना नहीं था।

अगले दिन नियुक्ति के बाद शाम को ही चिट्ठी लिखने बैठ गया। एक, दो, तीन, चार, पांच .....कितने पोस्टकार्ड, अच्छी तरह याद नहीं है,.....वही कि आदरणीय/प्रिय .....,बताते हुए काफी खुशी हो रही है कि मुझे एसएसपीएल प्राईवेट लिमिटेड, सूरजपुर में नौकरी मिल गयी है।

- अजीत कुमार

सहा. महा प्रबंधक (पीएफ) एवं नोडल अधिकारी, मंगलूरु

कंठस्थ

ट्रांसलेशन मेमोरी (टी.एम.) मशीन-साधित अनुवाद प्रणाली का एक भाग है जिससे अनुवाद की प्रक्रिया में सहायता मिलती है। ट्रांसलेशन मेमोरी वस्तुतः एक डेटाबेस है जिसमें स्रोत भाषा के वाक्यों एवं लक्षित भाषा में उन वाक्यों के अनुवादित रूप को एक-साथ रखा जाता है। ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित इस सिस्टम की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें अनुवादक पूर्व में किए गए अनुवाद को किसी नई फाइल के अनुवाद के लिए पुनः-प्रयोग कर सकता है। यदि अनुवाद की नई फाइल का वाक्य टी.एम. के डेटाबेस से पूर्णतः अथवा आंशिक रूप से मिलता है तो यह सिस्टम उस वाक्य के अनुवाद को टी.एम. से लाता है।

ट्रांसलेशन मेमोरी डेटाबेस बनाने के लिए स्रोत भाषा के वाक्यों एवं लक्षित भाषा में उनके अनुवादित वाक्यों का विश्लेषण किया जाता है। अनुवाद के लिए सिस्टम का निरंतर प्रयोग करते रहने से टी.एम. का डेटाबेस उतरोत्तर बढ़ता रहता है।

टी.एम. का डेटाबेस दो प्रकार का होता है : ग्लोबल ट्रांसलेशन मेमोरी (जी.टी.एम.) तथा लोकल ट्रांसलेशन मेमोरी (एल.टी.एम.)। एल.टी.एम. प्रत्येक अनुवादक के कम्प्यूटर पर अलग-अलग होती है, जबकि जी.टी.एम. एक सामूहिक डेटाबेस है जोकि राजभाषा विभाग के सर्वर पर उपलब्ध है। परीक्षण के पश्चात् विभिन्न एल.टी.एम. जी.टी.एम. का भाग बन जाती हैं।

ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित यह सिस्टम भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन राजभाषा विभाग के लिए विकसित किया गया है। इस सिस्टम के माध्यम से अंग्रेजी से हिंदी तथा हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद संभव है।

सिस्टम की मुख्य विशेषताएं:

लोकल एवं ग्लोबल टी.एम. बनाना, वर्क-फ्लो संयोजन, अनुवाद के लिए टी.एम. से पूर्ण मिलान, अनुवाद के लिए टी.एम. से आंशिक मिलान, पैकेज बनाने/अन्य कम्प्यूटर से प्राप्त करने/अन्य कम्प्यूटर पर भेजने की सुविधा, प्रोजेक्ट बनाने/अन्य कम्प्यूटर से प्राप्त करने/अन्य कम्प्यूटर पर भेजने की सुविधा, फाइल को अन्य कम्प्यूटर से प्राप्त करने/अन्य कम्प्यूटर पर भेजने की सुविधा, अनुवादित फाइल का विश्लेषण - अनुवादित फाइलों की संख्या, पूर्ण एवं आंशिक रूप से मिले हुए वाक्यों की संख्या, प्राप्त/अप्राप्त शब्द इत्यादि की रिपोर्ट, एक समय-विशेष में बनाए गए पैकेज, प्रोजेक्ट तथा अनुवाद की गई फाइलों की रिपोर्ट, शब्दकोश संयोजन, वाक्यांश खोज, गुणवत्ता निर्धारक मानदंड, द्विभाषिक फाइल को डाउनलोड एवं अपलोड करना,विभिन्न फाइल एक्सटेंशन को समर्थन,फाइल फॉर्मेट को यथावत रखना

-श्रीगंधा फीचर डेस्क

कौन है पति? अरुणाचल प्रदेश की लोक-कथा

तामांग अरुणाचल की प्रसिद्ध जनजाति अपातानी के मुखिया की बेटी थी। देखने में गोरी-गोरी, हंसती आंखों वाली तामांग के सुनहरे बालों को देखकर जनजाति के लोग उसे सूरज देवता की बेटी मानते थे।

तामांग गायन-नृत्य के साथ-साथ हथकरघे पर वस्त्र बनाने में भी बहुत निपुण थी। इसलिए उसका पिता डोनीगर्थ अपनी इकलौती बेटी का डिंग सिल, आचू आब्यों या ट्यूबो लिओबा जैसे देवपुरुषों में से किसी एक से विवाह करके धन कमाना चाहता था! उनकी जनजाति का यही रिवाज था कि लड़केवाले लड़की के पिता को लड़की ब्याहने के लिए धन देते थे। उस दिन अरुणाचल प्रदेश की जनजातियों में महिलाओं के लिए हथकरघा के वस्त्र बनाने की प्रतियोगिता हुई, और उसके बाद पुरुषों के लिए तीर-कमान की प्रतियोगिता हुई।

हर वर्ष की तरह तामांग को प्रथम पुरस्कार मिला। इस वर्ष तो तामांग ने कमाल कर दिया था। आकाश से नीले रंग की रेशमी शॉल पर चांद, सूरज और तारे, सफ़ेद, सुनहरे, लाल और गुलाबी रंग में बुने थे। चारों तरफ़ नक्षत्रों की झालर बुनकर शॉल को सजाया था। विश्वास ही नहीं होता था कि यह बुनी हुई शॉल है। लगता था कि कुशल चित्रकार ने सुंदर तस्वीर बनाई हो।

उधर आबूतानी नामक युवक ने तो तीर-कमान के कमाल से उड़ते हुए नक़ली पंछी, तितलियों के ऐसे निशाने साधे कि और कोई उसके आसपास भी नहीं रह पाया। प्रतियोगिता के बाद हुए नृत्य में तामांग और आबूतानी पहली बार मिले, और पहली मुलाक़ात में ही एक-दूसरे को चाहने लगे। उनको नृत्य करते देख लोग भी कह उठे, "क्या सुंदर जोड़ी है!"

बाद में वे चुपके-चुपके मिलते। क्योंकि दोनों को पता था कि तामांग के पिता किसी भी तरह दोनों के विवाह के लिए मंजूरी नहीं देंगे। इसलिए उन दोनों ने चुपके से विवाह कर लिया।

एक दिन तामांग के पिता ने उसे बताया कि तीन देवपुरुष उससे विवाह करना चाहते हैं। तामांग ने बताया कि उसका विवाह हो चुका है। पिता ने कहा कि वह ऐसे विवाह को नहीं मानता, न ही वे तीनों देवपुरुष मानेंगे। वह उनको नाराज़ नहीं कर सकता। इसलिए एक ही उपाय है। "क्या पिताजी?" तामांग ने पूछा। "सबको एकत्रित करके शर्त रखेगा। जो शर्त पूरी करेगा, वही तुम्हारा पति होगा।" तीनों देवपुरुष और आबूतानी को बुलाया गया। पहली शर्त है कि चारों को ज़मीन पर इस तरह नृत्य करना या कूदना होगा कि ज़मीन से संगीत ध्वनि आए।

शर्त सुनकर आबूतानी और तामांग परेशान हुए। पर आबूतानी की बहन ने कहा, "चिंता मत करो।" जहां आबूतानी को नृत्य करना था उसने वहां 'तालो' यानी पीतल की तश्तरियां मिट्टी के नीचे दबा दीं। नृत्य प्रारंभ हुआ। तीनों देवपुरुषों के नृत्य प्रारंभ हुए। तीनों देवपुरुषों के अनेक बार उछल-कूद करने पर भी कोई आवाज़ नहीं आई। आबूतानी ने जैसे ही नृत्य प्रारंभ किया, हर पदन्यास के बाद टन-टन की आवाज़ ने तार दिया। आबूतानी जीत गया। पर पिता और तीनों देवपुरुष नहीं माने। एक और शर्त रखी गई। तीर-कमान से 'टंलो' यानी धातु के गोलाकार पर निशाना ऐसे साधना कि तीर वहीं 'टंलो" पर लगा रहे। इस बार भी आबूतानी की बहन ने उपाय बताया। उसने आबूतानी के तीरों की नोक पर मधुमक्खी के छत्ते से निकाली गई मोम लगाई।

पहले देवपुरुष ने निशाना साधा। उसका तीर 'टंलो' पर जाने से पहले ही गिर गया। दूसरे देवपुरुष ने भी तीर कसा, पर निशाना चूका। वह टंलो के पास से गुज़र गया। तीसरे देवपुरुष ने तीर 'टंलो' पर सही मारा। टन की आवाज़ भी हुई, पर तीर नीचे गिर गया। आख़िर में आबूतानी ने तीर मारा। वह सीधा 'टंलो' के मध्य में लगा और वहीं पर लगा रहा। यह शर्त भी आबूतानी ने जीत ली। "अब आख़री शर्त होगी अगर वह आबूतानी जीता तो वही होगा तुम्हारा पति।" तामांग के पिता और तीनों देवपुरुष बोले। "यह तो बेईमानी है। हर बार आबूतानी के जीतने पर 'और एक शर्त! कहकर मुझे और आबूतानी को जुदा करने की कोशिश करते हो।" तामांग क्रोधित होकर बोली। गांव के बाकी लोगों ने तामांग का साथ दिया। लोगों का गुस्सा देखकर तामांग का पिता और देवपुरुष बोले, "अब वाक़ई में यह आख़री शर्त होगी।"

जो कोयले के टुकड़ों तथा मिट्टी के कुलड़े को सबसे दूर फेंकेगा, वही तामांग का पति होगा।

तामांग ने इस बार अपनी बुद्धि से काम लिया। उसने आबूतानी के कुलड़े के अंदर शहद लगा दिया और अपनी पालतू मधुमक्खियों को कोयले के चूरे से लथपथ कर दिया। एक-एक करके तीनों देवपुरुषों ने कुलड़े फेंके और बाद में कोयले के टुकड़े। अब बारी आई आबूतानी की। उसने पूरे ज़ोर से मिट्टी का कुलड़ा दूर फेंका जो तीनों के कुलड़ों से अधिक दूर गिरा। फिर उसने... मधुमक्खियों को मुट्ठी में पकड़कर हवा में फेंका। शहद की ख़ुशबू से कुलड़े तक पहुंचीं, जबकि देवपुरुषों के कोयले के टुकड़े उनके कुलड़ों तक भी नहीं गए। लोगों ने आबूतानी की जय-जयकार करी। "कल सुबह इसी जगह तामांग का विवाह मैं आबूतानी से रचाऊंगा। सब लोग निमंत्रित हैं।" तामांग के पिता ने ऐलान किया।

सुबह दुल्हन के वेश में तामांग जब मैदान में पहुंची, तब हैरान हो गई। आबूतानी के रूप में चार जने खड़े थे। यह भी चाल थी।

"पहचानो कौन है पति, और उसे माला पहनाओ," तामांग के पिता ने कहा।

तामांग ने थोड़ी देर आंखें मीची। फिर बोली, "मैं सबसे पहले हाथ मिलाऊंगी और फिर ही माला पहनाऊंगी।"

"बहुत खूब," तीनों देवपुरुष खुश होकर बोले। पर तामांग ने देखा, असली आबूतानी चुप खड़ा था। पहले देवपुरुष से जब तामांग ने हाथ मिलाया तो उसने ज़ोर से दबाया और आंख मारी। तामांग ने गुस्से से हाथ छुड़ाया। दूसरे देवपुरुष के पास पहुंचकर तामांग ने मिलाने के लिए हाथ बढ़ाया तो वह इतना पगला गया कि बांहें पसारकर आगे बढ़ने लगा। तामांग खिसककर निकल गई। तभी तीसरे देवपुरुष ने उतावला होकर हाथ आगे बढ़ाया और तामांग का हाथ पकड़कर ज़ोर-ज़ोर से हिलाने लगा। बड़ी मुश्किल से तामांग ने अपना हाथ छुड़ाया। अब वह चौथे यानी असली आबूतानी के पास पहुंची। उसने आबूतानी से हाथ मिलाया। उसके परिचित स्पर्श तथा उसकी आंखों से छलकते प्यार से वह निश्चित हुई। उसे पूरा विश्वास हुआ और उसने आबूतानी को वरमाला पहनाई। तामांग के पिता और तीनों देवपुरुष शर्म से गर्दन झुकाए लोगों की झिड़कियां सुनते रहे। लोगों ने ख़ुशी से पुष्पवर्षा करके विवाह की रस्म पूरी कर दी।

-श्रीगंधा फीचर डेस्क

उपलब्धियां व गतिविधियां

केआईओसीएल निगमित कार्यालय द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट निष्पादन के लिए विगत दो वर्षों में प्रदत्त प्रथम पुरस्कार को चालू वर्ष में भी बरकरार रखने हेतु नराकास (उपक्रम), बेंगलूरु द्वारा प्रदत्त प्रशस्ति पत्र को हिंदी अधिकारी द्वारा प्राप्त किया गया व अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक को सौंपा गया।

हिन्दी मिलाप

विश्व हिन्दी दिवस पर विशेष

सभी हिन्दी में काम करें, सभी काम हिन्दी में करें : एम.वी. सुब्बाराव

हिन्दी भाषा भारत को एक भाषाई डोर से बाँधकर रखने के साथ विश्व को एक सूत्र में पिरोने में सक्षम सिद्ध हो रही है। आज विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर हिन्दी की उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाओं के साथ भारत सरकार के इस्पात मंत्रालय के नियंत्रणाधीन एक मिनीरत्न सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम के रूप में केआईओसीएल की राजभाषा हिन्दी से जुड़ी प्रमुख उपलब्धियों व गतिविधियों को साझा करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

एम.वी. सुब्बाराव
अध्यक्ष सह-प्रबंध निदेशक, केआईओसीएल लि., बेंगलुरू

केआईओसीएल के मंगलुरू स्थित संयंत्र कार्यालय को राजभाषा के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए विगत तीन वर्षों (वर्ष 2016-17, वर्ष 2017-18 एवं वर्ष 2018-19) से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मंगलुरू से बड़े कार्यालयों की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। साथ ही राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट निष्पादन के विगत दो वर्षों में प्रदत्त प्रथम पुरस्कार को चालू वर्ष में भी बरकरार रखने हेतु नराकास (उपक्रम), बेंगलुरू द्वारा हाल ही में प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया है।

दिसंबर, 2019 तक केआईओसीएल लिमिटेड, बेंगलुरू नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), बेंगलुरू के संयोजक कार्यालय के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करता रहा। इसने 14 वर्षों तक इस उत्तरदायित्व का सफलतापूर्वक निर्वहन किया।

नवीन पहल के रूप में केआईओसीएल लिमिटेड द्वारा विगत वर्षों में स्थानीय विद्यालयों में हिन्दी वर्णमाला का चार्ट वितरित किया गया है, हिन्दी कार्यशाला, कविता पाठ, कवि गोष्ठी व संगोष्ठी आयोजित की गई है। केआईओसीएल लिमिटेड द्वारा विगत वर्षों में हिन्दी दिवस के साथ ही विश्व हिन्दी दिवस को प्रमुखता से आयोजित किया गया है और विश्व हिन्दी दिवस पर संगोष्ठी आयोजित की गई है।

सर्वप्रमुख गतिविधि के रूप में केआईओसीएल की ई-गृह पत्रिका श्रीगंधा का प्रवेशांक जून, 2020 में प्रकाशित किया गया है। ई-गृह पत्रिका की प्रति को राजभाषा विभाग के पोर्टल ई-पुस्तकालय पर भी उपलब्ध कराया गया है। पुनः हिन्दी पखवाड़ा-2020 की उपलब्धियों व गतिविधियों को समाहित करते हुए ई-गृह पत्रिका श्रीगंधा के एक विशेष परिशिष्टांक को भी प्रकाशित कराया गया है।

इस्पात क्षेत्र से जुड़े एक प्रतिबद्ध संगठन के रूप में अपने सूत्र वाक्य 'इस्पाती इरादा से ही हर काम, हर काम देश के नाम' के साथ आज विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर आइए संकल्प लें, सभी हिन्दी में काम करें, सभी काम हिन्दी में करें।

Hindi Milap Edition
Jan 10, 2021 Page No.
Powered by : eReleGo.com

एम.वि.सुब्बा राव
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक
M. V. SUBBA RAO
Chairman-cum-Managing Director

के आई ओ सी एल लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
II ब्लॉक, कोरमंगला, बेंगलूरु - 560 034.
KIOCL LIMITED
(A Government of India Enterprise)
II Block, Koramangala,
BENGALURU - 560 034.
CIN : L13100KA1976GOI002974

विश्व हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी भाषा भारत को एक भाषाई डोर से बांधकर रखने के साथ विश्व को एक सूत्र में पिरोने में सक्षम सिद्ध हो रही है। आज विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी की उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाओं के साथ भारत सरकार के इस्पात मंत्रालय के नियंत्रणाधीन एक मिनीरत्न सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम के रूप में केआईओसीएल की राजभाषा हिंदी से जुड़ी प्रमुख उपलब्धियों व गतिविधियों को साझा करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

केआईओसीएल के मंगलूरु स्थित संयंत्र कार्यालय को राजभाषा के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए विगत तीन वर्षों (वर्ष 2016-17, वर्ष 2017-18 एवं वर्ष 2018-19) से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मंगलूरु से बड़े कार्यालयों की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। साथ ही, राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट निष्पादन के विगत दो वर्षों में प्रदत प्रथम पुरस्कार को चालू वर्ष में भी बरकरार रखने हेतु नराकास (उपक्रम), बेंगलूरु द्वारा हाल ही में प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया है।

दिसंबर, 2019 तक केआईओसीएल लिमिटेड, बेंगलूरु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), बेंगलूरु के संयोजक कार्यालय के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करता रहा। इसने 14 वर्षों तक इस उत्तरदायित्व का सफलतापूर्वक निर्वहन किया।

नवीन पहल के रूप में केआईओसीएल लिमिटेड द्वारा विगत वर्षों में स्थानीय विद्यालयों में हिंदी वर्णमाला का चार्ट वितरित किया गया है, हिंदी कार्यशाला, कविता पाठ, कवि गोष्ठी व संगोष्ठी आयोजित की गई है। केआईओसीएल लिमिटेड द्वारा विगत वर्षों में हिंदी दिवस के साथ ही विश्व हिंदी दिवस को प्रमुखता से आयोजित किया गया है और विश्व हिंदी दिवस पर संगोष्ठी आयोजित की गई है।

सर्वप्रमुख गतिविधि के रूप में केआईओसीएल की ई-गृह पत्रिका श्रीगंधा का प्रवेशांक जून, 2020 में प्रकाशित किया गया है। ई-गृह पत्रिका की प्रति को राजभाषा विभाग के पोर्टल ई-पुस्तकालय पर भी उपलब्ध कराया गया है। पुनः, हिंदी पखवाड़ा, 2020 की उपलब्धियों व गतिविधियों को समाहित करते हुए ई-गृह पत्रिका श्रीगंधा के एक विशेष परिशिष्टांक को भी प्रकाशित कराया गया है।

इस्पात क्षेत्र से जुड़े एक प्रतिबद्ध संगठन के रूप में अपने सूत्र वाक्य "इस्पाती इरादा से ही हर काम, हर काम देश के नाम" के साथ आज विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर आइए संकल्प लें, सभी हिंदी में काम करें, सभी काम हिंदी में करें।

एम वि सुब्बा राव
(एम वि सुब्बा राव)

कार्यालय Office : 080 - 2553 1322 / 2553 1272
निवास Resi. : 080 - 2553 0136
फैक्स Fax : 080 - 2552 1584

आई एस ओ 9001, 14001 तथा ओएचएसएस 45001 कम्पनी
ISO 9001, 14001 & OHSAS 45001 COMPANY

ई-मेल e-mail : cmd@kioclltd.com
वेबसाइट Website : www.kioclltd.in
https://www.facebook.com/kioclltd
https://www.twitter.com/cmdkiocl

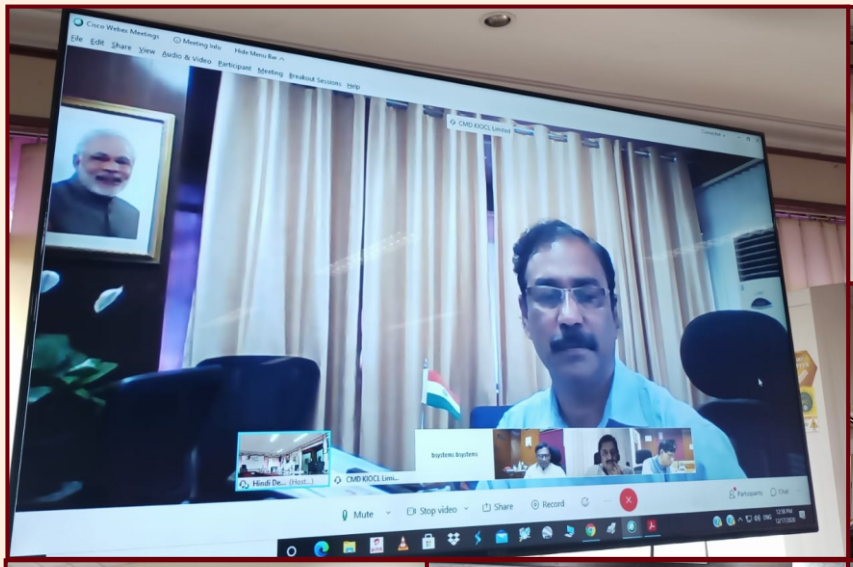

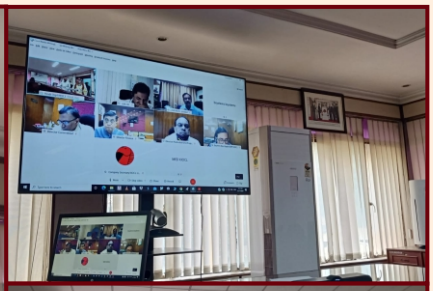

बुद्धि का सौदागर: गुजरात की लोक-कथा

एक समय की बात है। गुजरात के एक छोटे-से गाँव में एक निर्धन लड़का रहता था। उसके माता-पिता नहीं थे। गाँव में उसके पास आजीविका का कोई साधन नहीं था। परंतु वह बहुत बुद्धिमान था। अपने पिता से उसने काम की कई बातें सीखी थीं।

एक दिन उसके दिमाग में एक अद्भुत विचार आया। उसने शहर जाने की ठान ली। शहर जाकर उसने एक सस्ती सी दुकान किराए पर ले ली और दुकान के बाहर एक बोर्ड लगा दिया, जिसपर लिखा था-

बुद्धि का सौदागर

यहाँ बुद्धि बिकती है।

लड़के की दुकान के आस-पास फल, सब्जियाँ, कपड़े, जेवर, मेवे और रोजमर्रा की चीज़ों की कई दुकानें थीं। सारे दुकानदार उस लड़के की खिल्ली उड़ाते, "भाई! यह दुकान तो बड़े गजब की है। अब तो अक्ल भी बिकाऊ हो गई है।"

लड़का उनकी बातों की कोई परवाह नहीं करता था। वह दिनभर आते-जाते ग्राहकों को आवाज़ लगाता रहता, "आओ, आओ!। बुद्धि ले जाओ। एकदम खरी, सस्ती और उपयोगी। एक दाम, सही दाम। आओ साहब, ले जाओ।" लेकिन बहुत दिनों तक बुद्धि के सौदागर की दुकान पर कोई भी ग्राहक नहीं आया।

एक दिन उसने दुकान बंद करने का निश्चय कर लिया। तभी एक धनी सेठ का मूर्ख लड़का उसकी दुकान की ओर से गुज़रा। उसे समझ नहीं आया कि यह कैसी दुकान है।

"कोई फल या सब्जी होगी! मेरे पिता मुझे हमेशा निर्बुद्धि और मूर्ख कहते रहते हैं, क्यों न थोड़ी बुद्धि खरीद लूँ!" यह सोचकर उसने सौदागर लड़के से कहा, "एक सेर बुद्धि के कितने पैसे लोगे?"

लड़के ने उत्तर दिया, "मैं बुद्धि तौलकर नहीं, उसकी किस्म के हिसाब से बेचता हूँ। मेरे पास तरह तरह की बुद्धि है। सबका दाम अलग अलग है। आपको कैसी बुद्धि चाहिए?"

"तो ठीक है, एक पैसे में जिस तरह की बुद्धि आए, दे दो।" सेठ का लड़का लापरवाही से बोला।

सौदागर लड़के ने कागज़ की एक परची निकाली और सेठ के बेटे को दे दी। उस परची पर लिखा था--

जब दो लोग झगड़ रहे हों तो वहाँ खड़े होकर उन्हें देखना बुद्धिमानी नहीं है।

सेठ का बेटा खुशी -खुशी घर पहुँचा और अपने पिता को कागज़ की परची देते हुए बोला, "देखिए, पिता जी, मैं एक पैसे में अकल खरीदकर लाया हूँ।"

सेठ ने परची पढ़ी और तमतमाकर बोले, "मूर्ख, एक पैसे में यह क्या लाया है? यह बात तो सभी जानते हैं। तुमने मेरा एक पैसा डुबो दिया।"

सेठ तुरंत सौदागर की दुकान पर पहुँचा और उस लड़के को बुरा-भला कहते हुए बोला, "लोगों को ठगते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती? मेरा एक पैसा वापस करो।"

"पैसा क्यों वापस करूँ? माल दिया है पैसा लिया है," लड़के ने कहा।

"ठीक है। यह लो अपना कागज़ का फटा टुकड़ा जिसे माल कह रहे हो। नहीं चाहिए हमें तुम्हारा माल, यह लो!" कहते हुए सेठ उसकी परची वापस करने लगा।

"परची नहीं, मेरी सीख वापस करो। अगर पैसा वापस चाहिए तो आपको एक कागज़ पर लिखकर देना होगा कि आपका बेटा कभी भी मेरी सीख का प्रयोग नहीं करेगा।"

बात बन गई, दोनों पक्ष मान गए। सेठ ने कागज़ पर हस्ताक्षर कर दिए और अपना पैसा वापस लेकर प्रसन्न हो गया।

समय बीतता गया।

उस प्रदेश के राजा की दो रानियाँ थीं। एक दिन दोनों रानियों की दासियाँ बाज़ार गईं। वहाँ उनका झगड़ा हो गया। बात हाथापाई तक पहुँच गई। लोग चुपचाप खड़े देख रहे थे। उन्हीं में सेठ का बेटा भी था। झगड़ा बढ़ता देख सारे लोग एक-एक कर वहाँ से चले गए मगर सेठ का लड़का करारनामे के अनुसार वहाँ से जा नहीं सकता था। वह अकेला ही खड़ा रह गया। बस फिर क्या था, दोनों दासियों ने उसे अपना गवाह बना लिया। झगड़े की बात राजा-रानियों तक पहुँची। सेठ और उसका लड़का राजदरबार में लाए गए। दोनों रानियों ने लड़के से कहा कि वह उनके पक्ष में गवाही दे। सेठ और उसके बेटे के तो होश उड़ गए। वे सहायता के लिए बुद्धि के सौदागर के पास पहुँचे। बोले, "हमें किसी तरह बचा लीजिए।"

"मैं पाँच सौ रुपए लूँगा।" लड़के ने कहा।

"ठीक है। ये लो पाँच सौ रुपए।" सेठ ने तुरंत पाँच सौ रुपए निकालकर सौदागर को दे दिए।

"देखो, जब गवाही देने के लिए बुलाया जाए तो पागल की तरह व्यवहार करना," बुद्धि के सौदागर ने उपाय बताया।

सेठ के बेटे ने वैसा ही किया। राजा ने उसे पागल समझकर महल से बाहर निकाल दिया।

इसी तरह की एक-दो घटनाएँ और हो गईं। बुद्धि के सौदागर की चर्चा राजा के कानों में भी पड़ी। राजा ने उसे बुलवाया और पूछा, "सुना है, तुम बुद्धि बेचते हो! क्या तुम्हारे पास बेचने के लिए और बुद्धि है?"

"जी हुजूर! आपके काम की तो बहुत है लेकिन एक लाख रुपए..." सौदागर लड़के ने कुछ हिचकते हुए कहा।

"तुम्हें एक लाख रुपए ही दिए जाएँगे। तुम पहले बुद्धि तो दो।" राजा बोले।

सौदागर ने एक परची राजा को दे दी। राजा ने परची खोलकर पढ़ी!

परची पर लिखा था--

कुछ भी करने से पहले खूब सोच लेना चाहिए।

राजा को यह बात बहुत पसंद आई। उन्होंने अपने तकिये के गिलाफ़ पर, परदों पर, अपने कक्ष की दीवारों पर, अपने बरतनों पर इस वाक्य को लिखवा दिया जिससे वह इस बहुमूल्य बात को कभी न भूलें और न ही कोई और भूल सके।

एक बार राजा बहुत बीमार पड़ गए। राजा के एक मंत्री ने वैद्य के साथ मिलकर षड्यंत्र रचा और उनकी दवा में विष मिलाकर ले आया। राजा ने दवा का प्याला अभी मुँह के पास रखा ही था कि उसपर खुदे शब्दों पर उनकी नज़र पड़ी-- "कुछ भी करने से पहले खूब सोच लेना चाहिए।' राजा ने प्याला नीचे रखा और दवा को देखकर सोच में डूब गए कि यह दवा पीनी चाहिए या नहीं। वैद्य और मंत्री को लगा कि उनका भंडा फूट गया है। वे दोनों डर गए और राजा से क्षमा माँगने लगे, "महाराज, हमें क्षमा कर दीजिए, हमसे बहुत बड़ी भूल हो गई।"

राजा ने तुरंत सिपाहियों को बुलवाकर दोनों को कारागार में डलवा दिया। बुद्धि के सौदागर को बुलाकर इनाम में खूब सारा धन दिया और उसे अपना मंत्री बना लिया।

-श्रीगंधा फीचर डेस्क

हिंदी भाषा का उज्ज्वल स्वरूप

- संसार की उन्नत भाषाओं में हिंदी सबसे अधिक व्यवस्थित भाषा है।
- यह अपेक्षाकृत अत्यंत सरल भाषा है।
- यह अत्यंत लचीली भाषा है।
- हिंदी दुनिया की सर्वाधिक तीव्रता से प्रसारित हो रही भाषाओं में से एक है।
- यह ऐसी भाषा है जिसके अधिकतर नियम अपवादविहीन है।
- यह सच्चे अर्थों में विश्व भाषा बनने की पूर्ण अधिकारी है।
- हिंदी का शब्दकोश बहुत विशाल है और एक-एक भाव को व्यक्त करने के लिए सैकड़ों शब्द हैं।
- हिंदी लिखने के लिये प्रयुक्त देवनागरी लिपि अत्यन्त वैज्ञानिक है।
- हिंदी को संस्कृत शब्द संपदा एवं नवीन शब्द-रचना-सामर्थ्य विरासत में मिली है। वह देशी भाषाओं एवं अपनी बोलियों आदि से शब्द लेने में संकोच नहीं करती। अंग्रेजी के मूल शब्द लगभग 10,000 हैं, जबकि हिंदी के मूल शब्दों की संख्या ढाई लाख से भी अधिक है।
- हिंदी बोलने एवं समझने वाली जनता पचास करोड़ से भी अधिक है।
- हिंदी दुनिया की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है।
- हिंदी का साहित्य सभी दृष्टियों से समृद्ध है।
- हिंदी आम जनता से जुड़ी भाषा है तथा आम जनता हिंदी से जुड़ी हुई है। हिंदी कभी राजाश्रय की मोहताज नहीं रही।

-श्रीगंधा फीचर डेस्क

बप्पनाडू श्री दुर्गा परमेश्वरी - एक चित्रण

निवेदिता प्रभु

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे समृद्ध एवं संपन्न संस्कृति है, जिसकी मूल पहचान अनेकता में एकता है, क्योंकि हमारे देश में हिंदू, मुसलमान, सिख, इसाई आदि धर्मों के लोग रहते है, जिनके बोली, खान-पान, पहनावा, त्योहार, परंपरा और रीति-रिवाजों आदि में एक दूसरे से काफी अंतर है, फिर भी यहां सभी लोग मिलजुल कर प्रेम और भाईचारे के साथ रहते हैं, और यही भारत को विश्व के अन्य देशों से अलग बनाता है। कोरोना वायरस की महामारी के समय पर भी भारत का अभिवादन (🙏)अधिक कारगर साबित हो गया है।

चलो आज हम आपको एकता के प्रतीक मंदिर श्री दुर्गा परमेश्वरी, बप्पनाडू ले चलते है, जो कर्नाटक के दक्षिण कन्नड़ ज़िले के मुल्की शहर, बप्पनाडू गाँव, शाम्भवी नदी के तट पर स्थित है। यह 800 साल पुराना मंदिर और यह एक आधुनिक, साम्प्रदायिक सद्भाव का प्रमाण है। यह मंदिर मंगलौर- उडुपी राष्ट्रीय राजमार्ग के मध्य में मुल्की शहर में स्थित है। यह उडुपी से 29 किलोमीटर और मंगलौर से 29 किलोमीटर दूरी पर है। बप्पनाडू नाम एक मुसलमान व्यापारी के वजह से रखा गया है जिसे बप्पा ब्यारी कहते थे।

पुराण: देवताओं को सुर और दैत्यों को असुर कहा जाता है। दारिगसुर नाम के एक असुर शोणितापुर शहर पर अपना राज्य कर रहा था। यह हिरण्यकश्यप (हिरण्यकशिपु), हिरण्याक्ष, तारकासुर और त्रिपुरासुर के वंश का था। दारिगसुर को देवताओं और ख़ासकर भगवान विष्णु पर बहुत क्रोध था क्योंकि, उसके पूर्वजों का वध (संहार) भगवान विष्णु से हुआ था।

दारिगसुर ने कठिन तपस्या द्वारा ब्रह्मदेव को प्रसन्न करके यह वरदान प्राप्त कर लिया "आपके सृष्टि के किसी जीव से मेरी मृत्यु न हो। मैं समस्त जीवियों पर राज्य करूं।" इस वरदान से वह अहंकारी बना गया और वह खुद को अमर समझने लगा। इस वरदान की मदद से उसने विष्णु भगवान को पराजित करके उनके आभूषण शंख, चक्र (सुदर्शन चक्र), गदा और पद्म आदि को अपने वश में किया और उस आभूषण को भगवान के कमरे में सुरक्षित रखने के लिए अपने पत्नी को दे दिया।

भगवान विष्णु अपने खोए हुए आभूषणों के लिए बहुत चिंतित थे और शोक कर रहे थे। उस समय अचानक उनके आँखो से आंसू गिर गया (सात बूंदे) और यह आंसू सप्त-दुर्गा (सात देवियों - भगवती, ब्राम्बरम्बिका, परमेश्वरी, राजराजेश्वरी, अन्नपूर्णेश्वरी, रक्तेश्वरी और कात्यायनी) में बदल गई। देवी दुर्गा परमेश्वरी उनके सामने प्रकट हुईं और दारिगसुर को मारके

उनके आभूषणों को लौटने का वादा किया।

ये सप्त- दुर्गा, गुलिगा दैव के साथ शोणितापुर पहुंचे। एक दिन जब दारिगसुर स्नान करने के लिए नदी के पास जा रहा था भगवती देवि (सप्त-दुर्गों में से एक) उसके सामने एक बूढ़ी औरत के भेष में प्रकट हुई और भोजन के लिए भीख मांगने लगी।

दारिगसुर ने उसे अपने घर जाकर पत्नी से भोजन लेने के लिए सलाह दी। तदनुसार देवी भगवती ने दारिगसुर के घर जाकर उसके पत्नी से भोजन के बदलें में "विष्णु के आभूषण" का बातचीत किया और उसे मांगने लगी, पर उसके पत्नी ने उसे देने से इनकार कर दिया। बूढ़ी औरत ने फिर से जाकर दारिगसुर से कहा कि "तुम्हारी पत्नी ने मुझे भोजन देने से इनकार किया। तभी दारिगसुर अपनी पत्नी को जो बूढ़ी औरत चाहती है उसे देने के लिए सूचित करता है। अंत में उसकी पत्नी "विष्णु के आभूषणों" को उस बूढ़ी औरत को दे देती है। तभी दारिगसुर को एहसास होता है, कि वह धोखा खा गया है। तुरंत वह भगवती देवी के साथ युद्ध के लिए खड़ा हुआ। पहले गुलिगा दैव को हराया, बाद में सप्त- देवी के साथ सात दिन तक लड़ाई करके भूमिगत हो गया। असुर को ढूंढने के लिए माँ भगवती ने भद्रकाली का रूप धारण कर लिया। एक दिन जब दारिगसुर शिव / रुद्र का पूजा करने के लिए बाहर आया, तो भद्र काली ने उसका वध (संहार) किया। अंत में भगवती अपने बहन (सप्त-दुर्गों) के साथ मिलकर बैकुंठ चली गईं और विष्णु को उनके आभूषण लौटा दिया।

विष्णु भगवान संतुष्ट होकर उन्हें कुछ उपहार देना चाहते थे। तभी देवियों ने भू-लोक विहार की इच्छा प्रकट किया, तुरंत भगवान विष्णु ने चंदन का पेड़ की नाव बनवाकर उनको विहार के लिए भेज दिया। सात देवियों कासरगोड, कुंबले, उप्पल, पटतूर, मंजेईश्वर, उद्यावरा, उल्लाल, कूद्रौली, ससिहीतलू विहार कर रहे थे।

जब भगवती ससिहीतलू पहुंची तो उन्हें प्यास लगने लगी और पानी के लिए इधर-उधर देख रही थी तभी एक व्यक्ति ने उन्हें नारियल के पेड़ से कच्चा नारियल लेकर दिया, और वह संतुष्ट होकर वहीं रहने लगी अब ससिहीतलू को भगवती क्षेत्र भी कहा जाता है।

उसी तरह दुर्गा परमेश्वरी शाम्भवी नदी के तट पर स्थित हो गयी।

कुछ समय बाद शाम्भवी नदी में बाढ़ आ गई, मुल्की शहर और मंदिर ढह गया केवल पाँच लिंग और कुछ पैदल मार्ग ही अप्रभावित रहे। एक बार व्यापारी (बप्पा ब्यारी) सामग्री को नाव में ले जा रहा था अचानक उसकी नाव पत्थर (दुर्गा परमेश्वरी का मूर्ति) से टकराई और पानी का रंग लाल हो गया, यह देख के व्यापारी भयग्रस्त हो गया।

उसी रात को परमेश्वरी सपने में आकर व्यापारी (बप्पा ब्यारी) को आदेश देती है कि "तुम मुल्की समंत (राजा) से मिलकर मेरे लिए मंदिर निर्माण करो।" उनके आदेश अनुसार उन्होंने मुल्की समंत से मिलके एक सुन्दर मंदिर का निर्माण किया। माँ दुर्गा परमेश्वरी मूर्ति के साथ पाँच लिंग (मूला दुर्गा, अग्नि दुर्गा, जल दुर्गा, वन दुर्गा, और आग्र दुर्गा) का प्रतिष्ठान किया।

यहाँ हर साल मार्च- अप्रैल माह में महोत्सव मनाया जाता है। इस महोत्सव में अन्य धर्म के लोग भी भाग लेते है।

ख़ास तौर पर मुसलमान। यहाँ की विशेषता यह है कि महोत्सव का पहला प्रसाद बप्पा ब्यारी के परिवार को दिया जाता है, यह परंपरा आज भी जीवंत है।

भारत में लोग बहुत ही आध्यात्मिक और भगवान में अटल विश्वास रखने वाले होते हैं, इसलिये वो सभी धर्मों का आदर करते हैं। यह लोगों को नैतिक और सहिष्णु बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

जिस तरह बाग में अलग-अलग तरह के सुंदर और आकर्षक फूल होते हैं, जो वातावरण को सुगन्धित करते हैं। उसी तरह भारत में रहने वाले सभी लोग अलग-अलग हैं, लेकिन सभी की भावना एक है।

इसलिए हम सब एक है और यही हमारे देश की असली पहचान है।

-निवेदिता प्रभु

वरिष्ठ भंडारी, वित्त और लेखा विभाग, मंगलूरु

सिनेमा और समाज

चिन्मय पात्र

सिनेमा बीसवीं सदी में मानव जाति को मिले कुछ बेशकीमती वैज्ञानिक उपहारों में से एक है। इसने विश्व के मनोरंजन के परिदृश्य में एक क्रांति ला दी है क्योंकि इससे पहले नाटक, नौटंकी व त्योहारों के अवसर पर लगने वाले मेले ही लोगों के मनोरंजन का प्रमुख साधन थे। क्योंकि ऐसे समागम कमी-कभी ही आयोजित हुआ करते थे, अतः मनोरंजन के मामले मे लोग सदा ही अतृप्त रहा करते थे। सिनेमा विश्व के लोगों के लिये मनोरंजन का एक उत्तम साधन बनकर सामने आया है क्योंकि इसे किसी भी वर्ग, जाति या धर्म के लोग एक साथ देख सकते हैं तथा इसका आनंद पूरा परिवार एक साथ बैठ कर उठा सकता है। यह मनोरंजन का एक सुलभ साधन बन गया है। भारत में अंग्रेजों के शासन काल से ही फिल्में बनने का सिलसिला आरम्भ हुआ जिसका सफर मूक संवाद के साथ मगर श्वेत - श्याम और फिर रंगीन फिल्मों के दौर से गुजरा और आज भी भारतीय फिल्में पूरी दुनिया में बड़े चाव से देखी जाती हैं, लेकिन पुरानी फिल्मों और आज के दौर की फिल्मों में एक बड़ा अंतर है कि जहाँ पुरानी फिल्में समाज के सभी वर्गों को ध्यान में रखकर बनाई जाती थी वहीं आज का सिनेमा पारिवारिक एवं नैतिक हित्तों को कई तरह से अनदेखा करता है। जहाँ तक सिनेमा और समाज के आपसी संबंधों की बात है तो अब तक के अनुभवों से यह सिद्ध हो गया है कि दोनों अपनी-अपनी सीमा तक एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। हर दशक सिनेमा तेजी से परिवर्तित होते समाज को दर्शाता है। सिनेमा और समाज एक दूसरे के पूरक भी हैं। व्यक्ति थोड़ी देर के लिए ही सही, अपने दु:खपूर्ण संसार से बाहर आ जाता है। जिस प्रकार साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है, उसी प्रकार सिनेमा भी समाज का दर्पण बनता दिखाई दे रहा है।

-चिन्मय पात्र

प्रबंधक (सामग्री)

चतुर बहू: हिमाचल प्रदेश की लोक-कथा

हिमाचल प्रदेश में एक नगर है 'पालमपुर'। बहुत समय पहले की बात है, पालमपुर में एक धनी साहूकार रहता था। उसके चार बेटे थे, चारों का विवाह हो चुका था। चारों बेटे और तीनों बड़ी बहुएं तो साधारण बुद्धि के थे, लेकिन छोटी बहू दुर्गा बड़ी चतुर और बुद्धिमान थी। साहूकार को अपनी छोटी बहू पर बड़ा भरोसा था।

एक बार प्रदेश का राजा साहूकार से किसी बात पर नाराज़ हो गया। उसने साहूकार व उसके परिवार को देश निकाले की सज़ा दे दी और आदेश दिया कि देश छोड़ते समय वे अपने घर से कुछ भी लेकर नहीं जा सकते सिवाय अपने शरीर पर पहने हुए वस्त्र और आभूषण के। साहूकार ऐसी आज्ञा सुनकर बहुत दुखी हुआ पर राजा की आज्ञा मानने के अलावा उसके पास और कोई चारा भी नहीं था। चलते समय छोटी बहू ने राजा के सिपाहियों से पूछा कि क्या वह रास्ते में खाने के लिए कुछ रोटियां बना सकती है? राजा के सिपाहियों को इस पर कोई ऐतराज़ नहीं था। दुर्गा ने जब रोटियों के लिए आटा गूंधा तब आटे में चार बहुमूल्य माणिक छिपा दिए। फिर उस आटे की रोटियां बनाईं और राजा के सिपाहियों को दिखाईं। सिपाहियों ने रोटियां ले जाने दीं। दुर्गा ने रोटियां एक पोटली में बांध लीं।

साहूकार का परिवार अपनी यात्रा पर निकल गया। सारा दिन चलने के बाद वे लोग एक नगर में पहुंचे। अब तक रात हो गई थी। साहूकार के परिवार ने एक धर्मशाला में डेरा डाला और खा-पीकर सो गए। सुबह साहूकार ने कहा, "जो कुछ गहने सबके शरीर पर हैं, वह सब दे दो जिससे उन्हें बेचकर कुछ खाने-पीने का सामान और पहनने के लिए कपड़े आदि ख़रीदे जाएं।"

"पिताजी आपको गहने बेचने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह माणिक लीजिए और इसे बेचकर खाने-पीने का सामान भी ख़रीदिए और व्यापार भी शुरू करिए।" दुर्गा ने एक माणिक साहूकार को देते हुए कहा। साहूकार ने माणिक ले लिया और बाज़ार की तरफ़ चल दिया। 'यह बहुत बहुमूल्य माणिक है, इसका मूल्य तो कोई बड़ा जौहरी ही दे सकेगा।' उसने सोचा। वह माणिक लेकर सबसे बड़े जौहरी की दुकान पर पहुंचा और उसे माणिक दिखाया। माणिक देखते ही जौहरी की आंखों मे चमक आ गई। 'यह माणिक किसी तरह इससे हासिल करना होगा।' उसने सोचा। वह जौहरी असल में एक चोर था। उसने साहूकार की ख़ूब आवभगत की और बोला, "यह माणिक बहुत बहुमूल्य है। इसके लिए मुझे घर से सोने की मुहरें मंगानी होंगी," और नौकर को घर भेज दिया मुहरें लाने के लिए। अब वह साहूकार को दूसरे कमरे में ले गया। वहां एक कुर्सी रखी थी। कुर्सी कच्चे सूत से बुनी थी और उस पर एक पतली गद्दी रखी थी। कुर्सी के नीचे एक तहख़ाना था। "आप, जब तक नौकर आता है, इस कुर्सी पर बैठकर आराम कीजिए। मैं आपके लिए शर्बत पानी भिजवाता हूं।" जौहरी साहूकार से बोला। साहूकार कुर्सी पर बैठ गया। उसके बोझ से कच्चे सूत के धागे टूट गए और वह तहख़ाने में गिर गया। जौहरी ने झटपट तहख़ाने के मुंह पर एक बड़ा पत्थर रख दिया और बाहर निकल आया। माणिक उसने अपनी तिजोरी में रख दिया।

उधर धर्मशाला में बैठा साहूकार का परिवार उसकी प्रतीक्षा करता रहा। जब सुबह तक साहूकार नहीं लौटा तो दुर्गा को चिंता हुई। उसने दूसरा माणिक निकालकर अपने पति को दिया और बोली, "आप यह माणिक लेकर जाइए। यदि पिताजी से आपकी भेंट हो तो यह माणिक वापस ले आइएगा, वरना इस माणिक को बेचकर खाने-

पीने का सामान ले लीजिएगा।" दुर्गा का पति माणिक लेकर बाज़ार की तरफ़ चल दिया। वह भी उसी जौहरी की दुकान पर पहुंचा और उसके साथ भी जौहरी ने वही किया जो उसके पिता के साथ किया था। अब बाप-बेटे दोनों तहख़ाने में क़ैद हो गए।

जब दुर्गा का पति भी सुबह तक नहीं लौटा तो दुर्गा को बहुत चिंता हुई "अब मुझे ख़ुद ही पता लगाना होगा कि इस नगर में मेरे ससुर और पति कहां खो गए।" उसने अपने शरीर पर पहने हुए आभूषण लिए और बाज़ार की ओर चल दी। वहां पहुंचकर आभूषण बेचकर उसने खाने-पीने का सामान और सबके पहनने के कपड़े ख़रीदे। अपने लिए उसने सिपाही की पोशाक ख़रीदी। धर्मशाला पहुंचकर उसने खाने-पीने का सामान और कपड़े परिवारवालों को दिए और यह कहकर कि वह ससुर और पति की खोज में जा रही है, वहां से चल दी। उसने सिपाही का भेष बनाया और सीधे राजदरबार में पहुंची। उसने हाथ जोड़कर राजा से विनती की कि उसे अपने सिपाहियों में रख लें। राजा ने जब उस सुंदर युवक को देखा तो सहर्ष उसे सिपाही की नौकरी दे दी। उसे महल के चारों ओर पहरा देने का काम मिला। कुछ दिनों से महल की पशुशाला में रोज़ रात को एक राक्षस आकर उत्पात मचाता था। वह रोज़ एक पशु को मारकर खा जाता था। उसके डर के मारे कोई सिपाही उधर पहरा देने के लिए राज़ी नहीं होता था। दुर्गा ने राजा से पशुशाला में पहरा देने की आज्ञा मांगी। पहले तो राजा ने इतनी कम उम्र के नौजवान को माँत के मुंह में धकेलने से मना कर दिया लेकिन दुर्गा के बहुत कहने पर आज्ञा दे दी।

जंगल के रास्ते पर एक बहुत बड़ा और घना पेड़ था। जब रात हुई तो दुर्गा उस पेड़ पर चढ़कर बैठ गई। उसने छुरी से अपने बाएं हाथ की उंगली में घाव कर दिया जिससे कि घाव के दर्द से उसे नींद न आए। फिर पेड़ पर बैठकर पहरा देने लगी। आधी रात के बाद उसे जंगल की तरफ़ से आहट सुनाई दी। उसने देखा कि जंगल से निकलकर एक बड़ा सा भैंसा सींग उठाए महल की चार दीवारी की तरफ़ दौड़ा चला आ रहा है। वह समझ गई कि यही राक्षस है। जैसे ही वह भैंसा पेड़ के नीचे आया, दुर्गा दोनों हाथों में तलवार लेकर उसके ऊपर कूद गई और तलवार से उसकी गर्दन काट गिराई। मरते ही राक्षस अपने असली रूप में आ गया। दूसरे दिन जब राजा को यह समाचार मिला तो वह दुर्गा से बहुत प्रसन्न हुआ।

"तुमने राक्षस को बड़ी बहादुरी से मारा है। जो चाहे इनाम मांग लो," वह बोला।

"महाराज यदि आप प्रसन्न हैं तो मुझे नगर की रक्षा का भार दे दें और मुझे यह स्वतंत्रता दें कि जब चोर को पकड़ूं तो उसे जो चाहे दंड दूं।" राजा को इस नौजवान की बहादुरी और समझदारी पर पूरा भरोसा था। उन्होंने दुर्गा को नगर का कोतवाल बना दिया। अब दुर्गा अपने पति और ससुर की खोज में निकली। 'मेरे ससुर बहुत योग्य व्यापारी थे। वे उस बहुमूल्य माणिक को लेकर ज़रूर शहर के सबसे बड़े जौहरी के पास गए होंगे।' उसने सोचा। 'मैं भी सबसे पहले वहीं जाती हूं। मुझे पूरा विश्वास है कि जौहरी को ज़रूर मेरे पति व ससुर के बारे में पता होगा।'

दुर्गा जौहरी की दुकान पर पहुंची, जौहरी ने नगर कोतवाल को अपनी दुकान पर देखा तो झटपट उसकी ख़ातिरदारी में लग गया। "आप हमारी दुकान पर पधारे, अहो भाग्य! मैं आपकी क्या सेवा करूं?" उसने हाथ जोड़कर पूछा।

“हमारी राजकुमारी का शीघ्र विवाह होने वाला है और महाराज अपनी बेटी के लिए एक बहुत सुंदर माणिक जड़ा घर बनवाना चाहते हैं। आप मुझे बढ़िया से बढ़िया माणिक दिखलाइए।" दुर्गा, जो कोतवाल के भेष में थी, बोली।

जौहरी ने उसे अनेक माणिक दिखाए पर दुर्गा को कुछ पसंद नहीं आया। “ये सब आप क्या दिखा रहे हैं। कोई ऐसा बहुमूल्य माणिक दिखाइए जो राजकुमारी के पद के अनुरूप हो।” दुर्गा बोली।

अब जौहरी ने तिजोरी खोली और उसके अंदर से वही माणिक निकाला जो उसने साहूकार से धोखे से हासिल किया था। उस माणिक को देखते ही दुर्गा पहचान गई, यह वही माणिक है जो उसके ससुर लेकर बाज़ार गए थे।

“सिपाहियो पकड़ लो इसे, यह कोई जौहरी नहीं बल्कि एक बड़ा चोर है।” दुर्गा ने आज्ञा दी। “जल्दी बताओ जिस साहूकार से तुमने यह माणिक छीना है। उसे कहां रखा है?”

“मैं किसी साहूकार को नहीं जानता और यह माणिक मेरा है।" जौहरी बोला।

“ठीक है, अगर तुम सच नहीं बोलते तो मैं तुम्हारा सिर अभी धड़ से अलग करता हूं। मुझे महाराज ने पूरी छूट दी है। अपराधी को जो चाहे दंड दूं।” इतना कहकर दुर्गा ने तलवार निकाल ली।

अब जौहरी घबराया। 'लगता है कोतवात्र को सब पता है।' उसने सोचा। वह दुकान के बाहर भागने लगा। सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया और रस्सी से बांध दिया। दुर्गा दुकान की तलाशी लेने लगी। दूसरे कमरे में उसे बड़ा सा पत्थर दिखाई दिया। उसने सिपाहियों से पत्थर हटाने के लिए कहा। पत्थर हटाया गया। तहख़ाने में साहूकार व उसका बेटा अधमरी हालत में पड़े थे।

दुर्गा सबको लेकर दरबार में पहुंची और राजा को सब कुछ बताया। “मेरे नगर का सबसे बड़ा जौहरी चोर है!” राजा के क्रोध का ठिकाना नहीं था। उसने फ़ौरन उसे कारागार में डलवा दिया। राजा अपने इस युवक कोतवाल की वीरता और बुद्धिमत्ता से बहुत प्रभावित हुआ। इस वीर युवक को तो मेरा दामाद होना चाहिए। उसने अपनी पुत्री के विवाह का प्रस्ताव दुर्गा के सामने रखा।

“महाराज मैं ऐसा नहीं कर सकता। मुझे क्षमा करें।” उसके बाद दुर्गा ने अपना सिपाही का भेष उतारा और अपने असली रूप में आ गई। फिर हाथ जोड़कर राजा के पैरों में गिरकर उसे बताया कि किस तरह उसने सिपाही का भेष अपने ससुर और पति का पता लगाने के लिए धारण किया था।

राजा उसकी बुद्धिमत्ता पर चमत्कृत रह गया। उसने ना केवल दुर्गा को क्षमा कर दिया बल्कि उसके ससुर को नगर में व्यापार करने की स्वतंत्रता भी दी।

-श्रीगंधा फीचर डेस्क

जनकदेव सिंह
निजी सचिव-निदेशक (वित्त)
केआईओसीएल लिमिटेड,
बेंगलूरु.

ना जाने क्यूं अजीब सी है ये जिंदगी

ना जाने क्यूं अजीब सी है ये जिंदगी
एक पल में है कोई, तो दूसरे पल में कोई नहीं
मैं तो हूँ यहाँ... पर मेरा मन है और कहीं
ना जाने क्यूं अजीब सी है ये जिंदगी,
हर एक पल कुछ गंवाया तो दूसरे ही पल कुछ नया पाया
कभी कोई रूठा हमसे, तो कभी किसी ने हमें मनाया
कभी जिंदगी ने हमें रूलाया, तो कभी इसने हमें हंसाया
ना जाने क्यूं अजीब सी है ये जिंदगी
बहुत से रिश्ते दिए इसने, मां की ममता, पिता का प्यार
दादी की कहानी तो दादा का दिया दुलार,
कभी किसी ने अपनाया तो कभी किसी ने झटके से हाथ छुड़ाया
ना जाने क्यूं अजीब सी है ये जिंदगी
कभी जोर से गिराया तो कभी हौसले से ऊपर उठाया
कभी थोड़ा फीका सा तो कभी थोड़ा मीठा सा बनाया
कभी किसी परीक्षा में फेल तो कभी किसी परीक्षा में पास कराया
पर हर एक परीक्षा से इसने हमें बहुत कुछ सिखाया
भले ही हुए कभी फेल पर हमेशा इसने ज्ञान का सागर बढ़ाया
हर एक परिश्रम से कुछ नया ही सिखाया
ना जाने क्यूं अजीब सी है ये जिंदगी
एक पल में है कोई और दूसरे पल में कोई नहीं
एक पल में है कोई और दूसरे पल में कोई नहीं

ठगराज: उड़ीसा की लोक-कथा

जगन्नाथ पुरी में रथयात्रा की तैयारियां ज़ोर-शोर से चल रही थीं। पूरे देश से भक्तजन इस यात्रा में सम्मिलित होने आए थे। यहीं पर एक सराय में एक शहर के ठग और एक गांव के ठग की भेंट आपस में हो गई। दोनों ही ठगी के लिए रोज़ नई जगह जाते थे। इससे पकड़े जाने का डर कम रहता था। यहां भी ये दो नामी ठग धन कमाने की नीयत से आए थे। गांव के ठग के सिर पर सेमल की रुई का बड़ा सा बोरा था। शहर के ठग के कंधे पर छोटा सा झोला लटक रहा था।

"तुम्हारे पास क्या है?" शहर के ठग ने गांव के ठग से पूछा।

"मेरे पास ताज़ी हवा है। जो शहरों में नहीं मिलती। मैं इसे ऊंचे दाम पर बेचूंगा।"

इस बात से शहर का ठग ललचा गया। उसने कहा, "मेरे पास क़ीमती पत्थर हैं। जो कहीं भी बिक जाते हैं।"

"क्या तुम हवा के बदले मुझे अपना थैला दोगे?" शहर का ठग तो यही चाहता था, तुरंत तैयार हो गया।

रात में दोनों ठग अपने-अपने घर गए। अपनी पत्नी और बच्चों के सामने डींगे मारने लगे। "आज तो एक आदमी को ख़ूब उल्लू बनाया।"

"देखो छोटे से कोयले के थैले के बदले बोरी भर शुद्ध क़ीमती हवा लाया हूं।" लेकिन जैसे ही बोरी का मुंह खोला, रूई चारों तरफ उड़ने लगी।

दूसरे ठग ने जब थैला खोला और देखा उसमें कोयले थे, उसकी पत्नी ने ताना कसा, "चलो आज ठग को भी किसी ने ठग लिया। कोई ढंग का काम तो तुम्हें करना नहीं है। अच्छा हुआ।"

अगले दिन फिर रास्ते में उनका आमना-सामना हो गया। दोनों ने एक-दूसरे को घूरकर देखा और फिर ज़ोर से ठहाका लगाया। "ये भी ख़ूब रही, उस्तादों से उस्तादी!" एक बोला।

"मैं तो किसी सुंदरी के आंख का काजल चुरा सकता हूं।" दूसरा बोला।

"मैं तो ब्राह्मण के माथे का तिलक चुरा लूँ और उसे पता भी ना लगे।" पहले ने रौब दिखाया।

इस पर दोनों ने एक साथ ठगी करने की बात तय की। दोनों ने रात साथ में गुज़ारी। सवेरे वे एक घर में घुसे। वहां एक रईस बुढ़िया रहती थी। दोनों ने बुढ़िया के बारे में जानकारी आसपास के लोगों से इकट्ठी कर ली थी। वह बुढ़िया के पास गए, पैर छुए और बोले, "बुआ हम तुम्हारे भतीजे हैं। तुम तो इतने दिनों से घर आई नहीं। अब मेरे लड़के की शादी में तुमको ज़रूर आना है।"

बुढ़िया ने अपने भतीजों को बचपन में देखा था। इसी से उन्हें पहचाना नहीं। बुढ़िया ने अपने परिवार का हालचाल पूछा। फिर अतिथियों को चांदी के बर्तनों में खाना परोसा। ये बर्तन बुढ़िया को शादी में मिले थे। केवल विशेष मौक़ों पर ही इन्हें निकालती थी। उन दोनों ने खाना खाया और बर्तन धोने कुएं पर गए। ठगों ने बुढ़िया की नज़र बचाकर चुपचाप बर्तन अपने कपड़ों में छिपा लिए। एक चिल्लाने लगा, "अरे अरे क्या करता है, बर्तन कहां लिए

जा रहा है?" आवाज़ सुनकर बुढ़िया आई तो दोनों बोले, "बुआ बर्तन तो कुएं में गिर गए।" बर्तन खोने से बुढ़िया दुखी हो गई और उसने कहा, "बेटा मैं तो तुम्हारे साथ नहीं चल सकती। मेरा बेटा तुम्हारे साथ शादी में जाएगा।" बेटे ने उन दोनों को बर्तन छुपाते देख लिया था। उसने मां के सामने कुछ नहीं कहा और अपने घोड़े पर बैठ इन दोनों के साथ चल दिया।

चलते-चलते रास्ते में दोनों ठग बोले, "ए भाई घोड़ा रोको तो, बड़ी भूख लगी है। हमारे पास तो पैसे नहीं हैं, तुम अमीर आदमी हो, ज़रा अच्छा खाना खिलवाओ।"

"क्यों नहीं! इस जगह मेरा लेन-देन चलता है। हमें कुछ भी ख़र्च नहीं करना पड़ेगा।" युवक ने कहा। वह इन दोनों को सबक़ सिखाना चाहता था।

"ठीक है, ये तो बड़ी अच्छी बात है।" दोनों ठग बोले।

"तुम लोग यहीं रुको, मैं इंतजाम करके आता हूं," ऐसा कहकर वह युवक वहां एक व्यापारी के पास गया। गुपचुप बात की। फिर वापस आया और दोनों ठगों को व्यापारी के पास ले गया। व्यापारी ने युवक को धन दिया। वह धन लेकर जाने लगा तो दोनों ठग बोले, "अरे भई अकेले कहां जाते हो, हम भी चलते हैं।"

"नहीं मुझे काम है, थोड़ी देर में आता हूं। तब तक तुम्हारे स्वागत और खान-पान का ध्यान ये श्रीमान रखेंगे।" युवक ने व्यापारी की ओर इशारा किया।

व्यापारी ने उन दोनों को डपटकर कहा, "जाओ पीछे खेतों में मज़दूरों के साथ काम पर लगो।" उन दोनों ने व्यापारी को समझाने की बहुत कोशिश की कि वे मज़दूर नहीं हैं, पर व्यापारी ने कहा, "मैंने तुम दोनों को पैसे देकर ख़रीदा है, काम तो लूंगा ही।"

"नहीं-नहीं, हम लोग अच्छे घर-परिवार के हैं। उस युवक ने हमारे साथ धोखा किया है। आपको भी धोखा दिया है। हम उसे खोज लाएंगे, आप एक बार हमें जाने दो।" दोनों ने बहुत विनती की। व्यापारी को दया आ गई। उसने अपना एक नौकर उन दोनों के साथ युवक को खोजने के लिए भेज दिया।

इस बीच वह युवक दूसरे गांव पहुंच गया। वहां एक हलवाई की दुकान पर जाकर गपागप मिठाई खाने लगा। दुकान पर एक छोटा लड़का बैठा था। उसने कहा, "मिठाई खानी है तो दाम निकालो।"

"देखो बच्चे मैं तुम्हारे पिताजी का दोस्त हूं। उनसे जाकर कहो मक्खी मिठाई खा रही है, कुछ नहीं कहेंगे।" युवक ने प्यार से बच्चे को समझाया।

जब उस बच्चे ने जाकर पिता को बताया तो वे नाराजगी से बोले, "जाओ-जाओ, मक्खी तो मिठाई खाती ही है। चिंता मत करो, एक मक्खी कितनी मिठाई खा लेगी।"

बच्चा लौटा। इस बीच में युवक ने ख़ूब छककर मिठाई खाई। थैलों में भी भरी और घोड़े पर सवार होकर चल

दिया। "रुको-रुको," बच्चा चिल्लाता रहा।

आगे रास्ते में उसने एक बूढ़ी औरत को देखा। उसके साथ उसकी सुंदर बेटी भी थी। युवक उस पर मोहित हो गया। उसने झपटकर युवती को घोड़े पर बैठाया और तेज़ी से आगे बढ़ गया। बुढ़िया रोती-चिल्लाती उसके पीछे भाग रही थी। "अम्मा, तेरी बेटी को बहुत प्यार से रखूंगा। हां, मेरा नाम याद रखना-जंवाई राजा।"

बुढ़िया रोने, चिल्लाने लगी, "हाय मेरी बेटी, मेरी बेटी।" लोग जमा हो गए। "क्या हुआ? क्या हुआ?" पूछने लगे।

"वो मेरी बेटी को उठाकर ले गया, हाय! मैं क्या करूं?"

"कौन ले गया तेरी बेटी को अम्मा?" लोगों ने पूछा।

"जंवाई राजा," बुढ़िया ने बताया।

यह बात सुनकर लोग हंसने लगे और बोले, "अरे, यह तो ख़ुशी की बात है। बेटी को तो एक दिन जंवाई राजा के साथ जाना ही था, रोती क्यों है?"

इस तरह रास्ते में सबको चकमा देता युवक सुंदर युवती को साथ लिए घर की तरफ़ लौट रहा था। एक जगह पेड़ के नीचे उसने घोड़ा रोका और वे दोनों थैले में से मिठाई निकालकर खाने लगे। पास ही राजघराने का धोबी कपड़े सुखा रहा था। उसने कुछ मिठाई उसे भी दी और बताया, "ये मामूली नहीं, दिव्य मिठाइयां हैं। वहां झील के उस पार पेड़ पर उगती हैं। जितनी चाहे तोड़ लो। ख़ुद भी खाओ और बेचकर पैसे भी कमाओ।" धोबी उसकी बातों में आ गया और विनती की, "कुछ देर आप मेरे कपड़ों का ध्यान रखना, मैं मिठाई लेकर जल्द ही लौट आऊंगा।"

"जाओ, पर शीघ्र लौटना। हम अधिक देर नहीं रुक सकते हैं।" युवक ने कहा। जब धोबी चला गया तो युवक ने राजघराने के क़ीमती वस्त्रों की गठरी बांधी, घोड़े पर लादी और युवती को बैठाकर चल दिया।

व्यापारी का नौकर और दोनों ठग उसे ढूँढ़ते हुए हलवाई की दुकान पर पहुंचे। उसकी बातें सुनीं और अपने साथ मिला लिया। आगे बुढ़िया मिली, वो अभी तक अपनी बेटी के लिए रो रही थी। अब इन पांचों की टोली युवक की तलाश में आगे बढ़ी, तो देखा धोबी लुट जाने पर अपना सिर पीट रहा था। उसे भी साथ लिया। वे सब रास्ते में अपनी-अपनी कहानी सुनाने लगे। सब क्रोध में थे और युवक को पकड़ना चाहते थे।

अंततः एक गांव के बाहर इन लोगों ने उस युवक को पकड़ ही लिया। सबने उसका घेराव किया और धमकाने लगे। बचने का कोई उपाय न देख वह बोला, "देखो भाई, आप सब मेरी बात सुनो, मैं कोई चोर- उचक्का नहीं हूँ। मैं आप सबका सामान लौटा दूंगा। जो मिठाई मैंने खाई थी, उसके पैसे दे दूंगा। मैं तो परख रहा था कि कैसे लोग आसानी से बेवकूफ़ बन जाते हैं। आप सब छोटे-मोटे फ़ायदे के लिए मेरी बातों में आ गए। आज आप सब मेरे मेहमान हैं। मैं आप सबके रहने-खाने का इंतज़ाम अपने एक मित्र के घर में कर देता हूं। रात्रि में आराम कीजिए। सवेरे मैं सबका सामान लौटा दूंगा, फिर आप लोग अपने-अपने घर चले जाना।"

वे सब लोग खा-पीकर सो गए। युवक ने मोहल्ले के चौकीदार को घूस दी और डोंडी पिटवा दी, "गांव में कुछ नए लोगों को देखा गया है। लगता है पड़ोस के जासूस हैं। जो कोई इनको पकड़ने में सहायता करेगा उसे इनाम मिलेगा।"

पकड़े जाने की घोषणा सुनकर दोनों ठग, व्यापारी का नौकर, हलवाई, बुढ़िया, धोबी सभी घबरा गए और वहां से जान बचाकर भागे। जाते-जाते अपने पास का सामान भी वहीं छोड़ गए। बहुत दूर निकल जाने पर जब लगा कि कोई उनके पीछे नहीं आ रहा था तो दोनों ठग एक जगह बैठ गए। एक ठग दूसरे से बोला, "भाई आज तो जान बची। तुम शहर के नामी ठग हो और मैं गांव का। पर हम तो छोटी-मोटी हेरा-फेरी करते हैं। मामूली ठग हैं। असली ठग तो वह युवक है, ठगों का राजा 'ठगराज'। सबको ख़ूब चकमा दिया।"

उधर उस युवक ने सबके भागने का तमाशा देखा। हंसते-हंसते अपनी मां के चांदी के बर्तन लिए और युवती के साथ घोड़े पर सवार अपने घर पहुंचा। घर पर मां के आशीर्वाद से युवती से शादी की और सुखपूर्वक रहने लगा। एक दिन पत्नी ने पूछा कि उसने उन सब लोगों को क्यों सताया? इस पर युवक बोला, "ख़ाली हेरा-फेरी में क्या है! मज़ा तो चतुराई से चकमा देने में है।"

-श्रीगंधा फीचर डेस्क

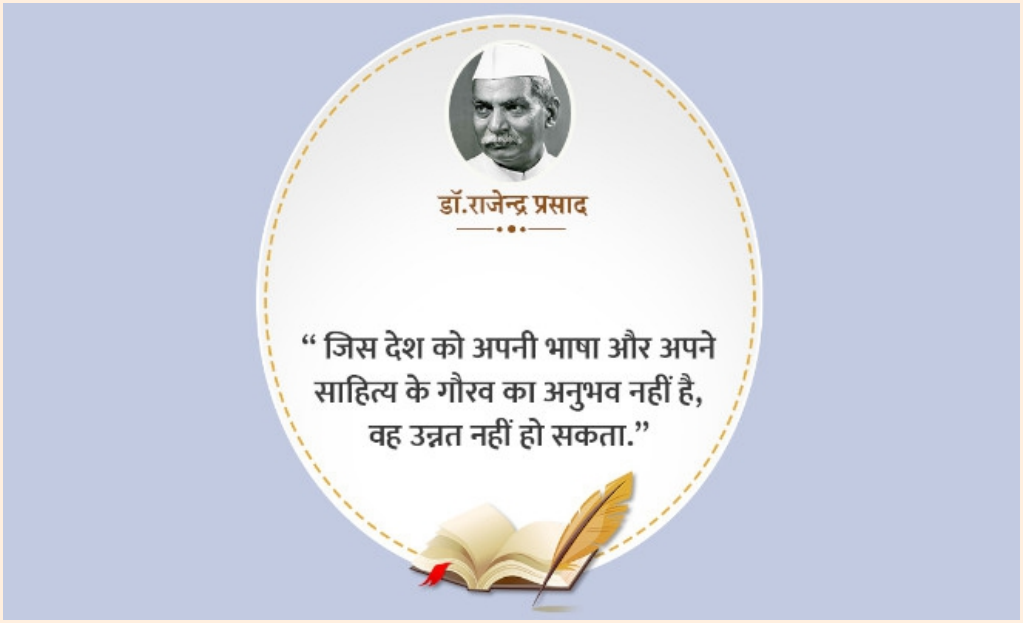

रामनाथ शानभाग
सहायक महा प्रबंधक (सिस्टम्स,आई व सी)
केआईओसीएल लिमिटेड,
मंगलूरु.

शशवाली
वित्त एवं लेखा विभाग
केआईओसीएल लिमिटेड,
बेंगलूरु.

विडंबना

जमीन ही बिस्तर
आसमान ही चादर
गहरी नींद गरीबों को
मुलायम शयन
वातानुकूलन
नींद नहीं है अमीरों को |

छात्र जीवन
बहुत पावन
दिन रात भर अध्ययन
समय, उत्साह सब कुछ है
खर्च करने के लिए पैसा नहीं |

रोजगारी जीवन
नहीं आराम
दिन रात भर काम ही काम
पैसा , उत्साह सब कुछ है
आनंद के लिए समय नहीं।
सेवानिवृत्त जीवन
फुरसत जीवन
दिन रात भर आराम
पैसा , समय सब कुछ है
आनंद के लिए उत्साह नहीं।

कमजोर ना समझो

कमजोर ना समझो तुम अपने को,
अपने में एक शक्ति रहती है।
तुम आग लगा सकते हो पानी में,
तुम में वह ज्वाला बहती है।
तुम अकेले नहीं हो इस दुनिया में,
तुम में संसार बसता है।
तुम कमजोर नहीं हो इस दुनिया में,
तुम में भगवान बसता है।
तुम कमजोर मत बनो,
बनना है तो सिकंदर बनो, शिवाजी बनो,
तुम एक सच्चा इंसान बनो।
तुम कमजोर नहीं हो, तुम कमजोर नहीं हो।
तुम में भगवान बसता है।

व्यावहारिक क्षेत्र में बढ़ते प्रयोजनमूलक हिंदी के कदम

चंदा रानी

भाषा मनुष्य के पास ऐसा साधन है जिसके माध्यम से व्यक्ति एक दूसरे के संपर्क में आता है। 'भाषा' शब्द संस्कृत के 'भाष्' धातु से बना है जिसका अर्थ है बोलना या कहना अर्थात् भाषा वह है जिसे बोला जाए। भाषा विचारों को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है। भाषा संस्कृति चेतना और साहित्यिक परंपरा की संवाहक है। भाषा एक संस्कार है। मूलरूप से इसके दो पक्ष हैं। पहला पक्ष- सौंदर्यपरक, दूसरा पक्ष- प्रयोजनपरक। भाषा की सौंदर्यपरक पक्ष अनुभूतियों की अभिव्यक्ति पर केंद्रित होता है। दूसरे का संबंध हमारी आवश्यकता और जीवन की उस व्यवस्था से जुड़ा है, जो व्यक्तिपरक होकर भी समाज सापेक्ष होता है। इसका संबंध मूलत: हमारी जीविका के साथ सेवा- माध्यम (सर्विस टूल) के रूप में प्रयुक्त होता है। भाषा - व्यवहार का यह दूसरा पक्ष ही भाषा का प्रयोजनमूलक संदर्भ है। अत: प्रयोजनमूलक हिंदी का तात्पर्य हिंदी के उन विविध रूपों से है जो सेवा माध्यम के रूप में सामने आते हैं। इस बात को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता कि हमारा शिक्षित वर्ग अंग्रेजी भाषा का प्रयोग मूलत: भाषा के इस प्रयोजन पक्ष को लेकर ही करता रहा है। भारतीय भाषाओं को एक तरफ़ उसने सौन्दर्यानुभूति एवं सांस्कृतिक मूल्यों के संवाहक के रूप में स्वीकार किया और दूसरी तरफ़ सामाजिक चेतना, लोक व्यवहार,उच्च शिक्षा तन्त्र और जीविकोपार्जन के लिए अंग्रेजी भाषा को आदर्श के रूप में स्वीकार करता रहा है। अब स्थिति बदल रही है, हिंदी भाषा सौंदर्यपरक आयाम के साथ- साथ प्रयोजनपरक आयाम में भी प्रयुक्त हो रही है। विश्व की समस्त प्रचलित भाषाओं के अध्ययन से पता चलता है कि भाषा के तीन प्रमुख रूप हैं- बोलचाल की भाषा, साहित्यिक भाषा तथा प्रयोजनमूलक भाषा।

प्रयोजनमूलक की तुलना में उसके बोलचाल संबंधी तथा साहित्यिक रूपों की अपेक्षा प्रयोजनमूलक रूप के कारण ही भाषा में अधिक लयात्मकता आती है, जो उसे चिरंजीवी रखने में अहम भूमिका अदा करती है। आज साहित्य संस्कृत, प्राकृत मगधी तथा पाली भाषा में भी उपलब्ध है, परंतु प्रयोजनमूलकता का तत्व नदारद रहने से लगभग मृतप्राय मानी जाती है। आधुनिक हिंदी भाषा अपनी प्रयोजनमूलकता के कारण ज्ञान -विज्ञान के क्षेत्र में अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हो रही है और इसी कारण उसका भाषागत विकास भी चरमोत्कर्ष तक पहुँच रहा है। प्रयोजनमूलक हिंदी ज्ञान-विज्ञान, खेलकूद, कार्यालयी, विज्ञापन एवं मीडिया, विधि या कानून,वैज्ञानिक एवं तकनीकी, साहित्यिक, वाणिज्य तथा राजकाज के सरकारी कार्यों में वैसे तो खड़ी बोली के माध्यम से अधिकाधिक प्रयुक्त की जा रही है फिर भी, हिन्दुस्तानी की संभावना बराबर बनी रहती है। इसके साथ-साथ संपर्क भाषा के रूप में वह देश के लगभग पच्चीस राज्यों तथा अनेक संघ शासित प्रदेशों में अहम भूमिका निभा रही है। सरकार द्वारा आविर्भूत 'द्विभाषा सूत्र' के कारण उसके प्रचार- प्रसार में वृद्धि होने के साथ वह अनेक भारतीय भाषाओं के बीच संपर्क तथा एकता की कड़ी के रूप में भी कार्यरत है। हिंदी का प्रयोजनमूलक रूप न केवल उसके विकास में सहयोग देगा, बल्कि उसको जीवित रखने एवं लोकप्रिय बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा।

विश्व में मानव सभ्यता, संस्कृति और ज्ञान - विज्ञान की उन्नत धरोधर को अक्षुण्ण रखने में भारतवर्ष का जो योगदान रहा है, उसमें भाषिक दायित्वों के निर्वाहस्वरूप भारतीय भाषाओं की समन्वयक हिंदी भाषा की अहम भूमिका रही है। हिंदी एक मात्र ऐसी भाषा है, जिसने भारतीय साहित्य, कला, ज्ञान तथा संस्कृति को न केवल

गहन सार्थक अभिव्यक्ति प्रदान की है, बल्कि उनकी अनुरक्षा करते हुए उन्हें लयात्मक भी बनाए रखा है। आंतरिक संरचना की सौन्दर्यशीलता, भाव-भंगिमाओं की गहनता, अभिव्यक्ति की तीव्रता एवं शैलियों की विविधता को समेटे हिंदी साहित्य अनेक उन्नत रूपों में प्रवाहमान है। परंतु आधुनिक युग में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अभूतपूर्व प्रस्फुटन एवं प्रसार के कारण हिंदी भाषा की उपादेयता और प्रयोजनमूलक अनेक क्षेत्रों में स्वयं सिद्ध होने के फलस्वरूप उसके नये प्रयुक्ति रूप भी उभरकर सामने आए हैं, जिनमें हिंदी के प्रयोजनपरक स्वरूप को सर्वोपरि माना जा सकता है।

प्रयोजनमूलक हिंदी के संदर्भ में 'प्रयोजन' शब्द के साथ 'मूलक' उपसर्ग लगने से प्रयोजनमूलक शब्द की निर्मिती होती है। प्रयोजन से तात्पर्य है उद्देश्य अथवा प्रयुक्ति। 'मूलक' से तात्पर्य है आधारित। अत: प्रयोजनमूलक भाषा से तात्पर्य हुआ - किसी विशिष्ट उद्देश्य के अनुसार प्रयुक्त भाषा। इस तरह, प्रयोजनमूलक हिंदी से तात्पर्य हिंदी का वह प्रयुक्तिपरक विशिष्ट रूप या शैली है जो विषयगत तथा संदर्भगत प्रयोजन के लिए विशिष्ट भाषिक संरचना द्वारा प्रयुक्त की जाती है। प्रयोजनमूलक हिंदी को व्यावहारिक हिंदी, फंक्शनल हिंदी या एप्लाइड यानी व्यावहारिक हिंदी के नाम से भी जाना जाता है। इस हिंदी का मुख्य प्रयोजन जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करना है। इसका प्रयोग कार्य-विशेष के लिए होता है। इसलिए इसे विशिष्ट प्रयोजन की भाषा भी कहा जाता है। प्रयोजनमूलक हिंदी वास्तव में अंग्रेजी के 'Functional Language' का हिंदी रूपांतर है। इसे व्यावहारिक, कार्यालयीन, प्रशासनिक हिंदी के नाम से भी जाना जाता है। डॉ.रमा प्रसन्न नायक इसे व्यावहारिक हिंदी कहते हैं।

डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा का इस संदर्भ में मत है -निष्प्रयोजन हिंदी कोई चीज़ नहीं है, लेकिन प्रयोजनमूलक विशेषण उसके व्यावहारिक पक्ष को अधिक उजागर करने के लिए प्रयुक्त किया गया।

डॉ. विनोद गोदरे के मतानुसार- प्रयोजनमूलक हिंदी का सम्प्रेषण अधिक -संगत अर्थगर्भित, लक्ष्यभेदी, स्पष्ट तथा सरल है।

मोटूरि सत्यनारायण का मत है कि "जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोग में लाई जाने वाली हिंदी ही प्रयोजनमूलक हिंदी है।" डॉ.माया सिंह और डॉ. सिद्धेश्वर कश्यप का मानना है कि "प्रयोजनमूलक हिंदी जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति का माध्यम है। इसमें सौंदर्यपरकता, केंद्रीयता और आत्मसुख का अभाव होता है। यह जीवन की व्यवस्था से जुड़ी होती है।" उपर्युक्त विद्वानों के मतानुसार 'प्रयोजनमूलक भाषा भाषा का रूप है, जिसका प्रयोग किसी प्रयोजन विशेष अथवा कार्य विशेष के संदर्भ में होता है।' प्रयोजनमूलक हिंदी वह है जो हमारे सामान्य व्यवहार के अतिरिक्त हमें रोजी- रोटी, विशिष्ट ज्ञान एवं राज-काज के कार्यों के विशिष्ट उद्देश्यों में सहायक होती है। जीवन - जगत की विभिन्न आवश्यकताओं अथवा लोक -व्यवहार उच्च शिक्षा, तंत्र तथा जीविकोपार्जन आदि के लिए विशेष अभ्यास और ज्ञान के द्वारा विशेष शब्दावली में विशेष अभिव्यक्ति इकाइयों एवं सम्प्रेषण कौशल से समाज- सापेक्ष व्यावहारिक प्रयोजनों की संपूर्ति के लिए प्रयुक्त की जाने वाली विशेष भाषा प्रयुक्तियों को प्रयोजनमूलक हिंदी कहा जा सकता है।

प्रयोजनमूलक हिंदी और उसके प्रयोगात्मक क्षेत्र

प्रयोजनमूलक हिंदी आज देश में बहुत बड़े फलक पर प्रयुक्त हो रही है। केन्द्र और राज्य सरकारों के बीच संवादों का पुल बनाने में आज इसकी महती भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। आज इसने एक ओर कंप्यूटर, टेलेक्स, तार, इलेक्ट्रॉनिक, टेलीप्रिंटर, दूरदर्शन, रेडियो, अखबार, डाक, फिल्म और विज्ञापन आदि जनसंचार के माध्यमों को अपनी गिरफ्त में ले लिया है, तो वहीं दूसरी ओर शेयर बाजार, रेल, हवाई जहाज, बीमा उद्योग, बैंक आदि औद्योगिक उपक्रमों, रक्षा, सेना, इन्जीनियरिंग आदि प्रौद्योगिकी संस्थानों, तकनीकी और वैज्ञानिक क्षेत्रों, आयुर्विज्ञान, कृषि, चिकित्सा, शिक्षा, ए.एम.आई. के साथ विभिन्न संस्थाओं में हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण दिलाने कॉलेजों, विश्वविद्यालयों, सरकारी, अर्द्धसरकारी कार्यालयों, चिट्ठी-पत्र, लेटर पैड, स्टॉक-रजिस्टर, लिफ़ाफ़े, मुहरें, नामपट्ट, स्टेशनरी के साथ-साथ कार्यालय-ज्ञापन, परिपत्र, आदेश, राजपत्र, अधिसूचना, अनुस्मारक, प्रेस-विज्ञप्ति, निविदा, नीलामी, अपील, केबलग्राम, मंजूरी पत्र तथा पावती आदि में प्रयुक्त होकर अपने महत्व को स्वतः सिद्ध कर दिया है। कुल मिलाकर यह कि पर्यटन बाजार, तीर्थस्थल, कल-कारखाने, कचहरी आदि अब प्रयोजनमूलक हिंदी की हद में आ गए हैं। हिंदी के लिए यह अति उत्तम है।

डॉ. भोलानाथ तिवारी ने प्रयोजनमूलक हिंदी के निम्नलिखित रूप बताए हैं –

1. सामान्य अर्थ में बोलचाल की हिंदी से अभिप्राय है- हिंदी भाषी क्षेत्र- दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान और मध्यप्रदेश की बोल- चाल की भाषा।
2. व्यापारी भाषा - वाणिज्य- व्यापार की भाषा के रूप में हिंदी सालों से मंडियों, सराफे, दलालों, झवेरियों, शेयर- सट्टा बाज़ार, लेन-देन, क्रय -विक्रय,विनिमय आदि की भाषा के कार्यों के लिए प्रयुक्त होती रही है।
3. कार्यालयीन हिंदी जो विभागों एवं मंत्रालयों के आधार पर विविध कार्यों का संपादन करती है।
4. शास्त्रीय हिंदी - इसमें काव्यशास्त्र, भाषाशास्त्र, दर्शनशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, विधिशास्त्र, संगीतशास्त्र आदि की भाषाएँ प्रयुक्त होती हैं।
5. तकनीकी हिंदी - इसके रूप में हिंदी यांत्रिकता, विज्ञान, इंजीनियरी, असैनिक आदि के रेखांकन तथा मूल्यांकन की माध्यम भाषा का कार्य करती है।
6. समाजी हिंदी - इसका प्रयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए सामाजिक लोग करते हैं।
7. साहित्यिक हिंदी - इसका प्रयोग कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि में होता है, जिसकी भाषा में पर्याप्त अंतर होता है।
8. प्रशासनिक हिंदी - पुलिस, सेना, विधि व्यवस्था के निर्माण में प्रयोजनमूलक हिंदी सक्षम है और इनके कार्य को संपादित करने का माध्यम बनकर लक्ष्य की पूर्ति करती है।

9. जनसंचार माध्यम की हिंदी - रेडियो, टेलीविजन, पत्रकारिता, विज्ञापन आदि संचार माध्यमों की हिंदी उपयुक्त सभी प्रकार की शब्दावलियों की विषय के संदर्भ में स्वीकार करती है।

हिंदी भाषा की प्रयोजनमूलक प्रयुक्तियाँ

1. साहित्यिक प्रयुक्ति - हिंदी भाषा की सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रयुक्ति साहित्यिक है। हिंदी की साहित्यिक प्रयुक्ति की परंपरा लगभग एक हजार साल पुरानी है। हिंदी साहित्य का इतिहास इसका प्रमाण है। जो हिंदी साहित्य के साथ-साथ हिंदी भाषा के विकास-प्राचीन हिंदी, मैथिली, संधा, सधुक्कड़ी, अवधी, ब्रज, खड़बोली- को क्रमबद्ध रुप में प्रस्तुत करता है। हिंदी की साहित्यिक प्रयुक्ति ने कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, संस्मरण, आलोचना आदि विधाओं को मर्यादाओं के साथ समेटा है। भारतीय आर्य एवं अनार्य तथा विश्व की अनेक भाषाओं से शब्दों को ग्रहण करके युग-बोध एवं युग-चेतना को गहराई से अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया है। इस दृष्टि से हिंदी की साहित्यिक प्रयुक्ति विशाल, उदार एवं गतिशील है। कुछ विद्वान इसे प्रयोजनमूलक हिंदी की प्रयुक्ति नहीं मानते हैं।

2. वाणिज्यिक प्रयुक्ति - इस प्रयुक्ति के अंतर्गत वाणिज्य -व्यापार, व्यवसाय, मंडियों, शेयर बाज़ार, झवेरी बाज़ार, बीमा निगम, बैंक, ऋण, विपणन, यातायात, आयात-निर्यात, थोक एवं खुदरा व्यापार आदि क्षेत्रों का समावेश होता है। वाणिज्यिक हिंदी के अंतर्गत उन सभी रुपों की गणना करनी होगी जिनका संबंध उत्पादन, वितरण, क्रय-विक्रय, विज्ञापन और आर्थिक लेनदेन से है। इन क्षेत्रों में प्रयुक्त भाषा आम बोल-चाल की तथा साहित्यिक भाषा से भिन्न नीरस व सपाट होती है। जैसे-चाँदी में उछाल, डॉलर के मुकाबले रुपए की तेजी सूचकांक 3400 अंक पार करके नीचे आया, एचपीसीएल का लाभ बढ़ा, तेल की धार ऊँची, दाल नरम, मिर्च तेज, आदि वाक्यांश इस प्रयुक्ति के अंतर्गत आते हैं। इस प्रयुक्ति का क्षेत्र काफी विस्तृत एवं लोकप्रिय है।

3. कार्यालयीन प्रयुक्ति - प्रशासनिक कार्यों में प्रयुक्त भाषा को कार्यालयीन हिंदी कहते हैं। सरकार को आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, सुरक्षात्मक आदि अनेक दृष्टियों से प्रशासन का भार संभालना पड़ता है। ये सब इकाइयाँ प्रशासन की है। हिंदी राजभाषा है। राजभाषा की कार्यालयीन प्रयुक्ति विशेष महत्वपूर्ण होती है। हिंदी की कार्यालयीन प्रयुक्ति का रूप बोल-चाल व साहित्यिक भाषा से भिन्न होता है। साहित्यिक भाषा की तरह यह आलंकारिक, लाक्षणिक या व्यंजना- प्रधान न होकर स्पष्ट

और अभिधा-प्रधान होता हैं। यह द्विअर्थी या अनेकार्थी नहीं होनी चाहिए। इसमें जो कुछ भी कहा जाए वह नियत शब्दावली के भीतर कहा जाता है। यह नीरस व सीधी होती है। कार्यालयीन प्रयुक्ति की भाषा में निर्वेयक्तिकता, संपूर्णता एवं स्पष्टता, निष्पक्षता, असंदिग्धता व वर्णनात्मकता के गुण होने चाहिए। हिंदी की प्रस्तुत प्रयुक्ति मसौदा और टिप्पण लेखन, प्रशासकीय पत्र-लेखन, प्रतिवेदन, अनुवाद तथा अन्य कार्यालयी कार्यों के लिए उपयोगी है।

4. राजभाषा प्रयुक्ति - 14 सितंबर, 1949 के दिन हमारे संविधान में हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया गया। वही भाषा राजभाषा के रूप में सिंहासन पर आरूढ़ हो सकती है जो विधान-मंडल, शासन, न्यायपालिका तथा कार्यपालिका के लिए उपयुक्त हो। राजभाषा का संबंध प्रशासनिक कार्य-प्रणाली के संचालन से होता है क्योंकि राजभाषा बुद्धिजीवियों, प्रशासकों, कर्मचारियों तथा शिक्षित समाज से जुड़ी होती है। इसका महत्व राजनीतिक दृष्टि से अधिक होता है। इस प्रकार राजभाषा हिंदी एक प्रयुक्ति के रुप में विकसित होकर हमारे सामने आयी। केंद्र सरकार के मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों, संस्थानों, निगमों, कंपनियों, बैंकों, विभिन्न आयोगों एवं समितियों आदि क्षेत्रों में इस प्रयुक्ति का उपयोग होता है। पारिभाषिक एवं वैज्ञानिक-तकनीकी शब्दावली, अनुवाद, विशिष्ट वाक्य-योजना एवं वाक्य-रचना इसके मुख्य तत्व हैं। राजभाषा हिंदी की प्रयुक्ति बहुत ही विशाल, उदार और गतिशील है।

5. विज्ञापन एवं मीडिया भाषा प्रयुक्ति - आज के उपभोक्तावादी युग में उत्पादित वस्तुओं की बिक्री तब होगी जब उपभोक्ता को इसका पता लगे कि ये वस्तुएं बाजार में आ गई हैं। इस प्रकार, उत्पादक - प्रतिष्ठान अपने उत्पादन की बिक्री के लिए विज्ञापन का सहारा लेते हैं। जन -जन में जागृति लाने हेतु या महत्वपूर्ण सूचना प्रेषित करने हेतु सरकार भी विज्ञापन का सहारा लेती है। उपभोक्ता को उनके उत्पादन का पता मीडिया या जनसंचार के विविध रूपों में प्रसारित विज्ञापनों से लगता है। जन-जन तक सूचना प्रसारित करने वाले आकाशवाणी, दूरदर्शन अन्य टी.वी चैनल तथा सिनेमा ये विज्ञापन दृश्य-श्राव्य व लिखित रुप में होते हैं। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित विज्ञापन दृश्य- पाठ्य होते हैं। इन्हीं विज्ञापनों द्वारा उत्पादक प्रतिष्ठान विक्रय में वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि टी.वी देखने वाला व्यक्ति ब्रेक के बाद दर्शक से ग्राहक बन जाता है। ये विज्ञापन उत्पादक प्रतिष्ठान के प्रति उपभोक्ताओं तथा जनता में रुचि व विश्वास पैदा करते हैं।

प्रयोजनमूलक प्रयुक्ति के रुप में विज्ञापन की भाषा बहुत तेजी से उभरी है। हमारे देश की अधिकतर जनता हिंदी समझती है। अत: विज्ञापन के क्षेत्र में हिंदी की इस प्रयुक्ति का तेजी से विस्तार हो रहा है। विज्ञापनी भाषा का मुख्य आधार आर्थिक, सामाजिक-सांस्कृतिक स्थितियाँ है। विज्ञापन मुख्य रुप से श्राव्य होते हैं। आकर्षक वाक्य-विन्यास, शब्दों का सार्थक चयन तथा प्रवाहमयी भाषिक संरचना इसके मुख्य तत्व हैं। विज्ञापन की भाषा का संबंध मूलत: व्यापार से है। अत: उसमें आकर्षक, मोहक, लहजेदार भाषा-शैली, कर्णप्रियता, सुपाठ्यता, संक्षिप्तता, सांकेतिकता, नाटकीयता आदि गुण होने चाहिए जैसे; 1. अन्तराष्ट्रीय डिजाइन्स, 2. भारतीय कीमत, 3. थोड़ा और चलेगा 4. ठण्डा – ठण्डा कूल-कूल आदि विज्ञापन की भाषा इतनी सक्षम होनी चाहिए कि वह जनसंचार के अलग-अलग माध्यमों से (दृश्य, श्राव्य या पाठ द्वारा) प्रसारित होने पर भी एक जैसा संदेश

दे। यही कारण है कि एक ही विज्ञापन अलग-अलग माध्यमों से दृश्य, श्राव्य या पाठ्य के रूप में प्रसारित या प्रकाशित किए जाते हैं। विज्ञापन की भाषा का विशिष्ट रूप सरकारी प्रयुक्ति के रुप में विकसित हो गया है।

6. विधि एवं कानूनी भाषा प्रयुक्ति - विधि या कानून या न्यायपालिका की हिंदी अनुवाद पर आधारित होती है। इसका कारण न्यायपालिका में अंग्रेजी का प्रभुत्व है। किंतु अनुवाद तथा विधि- शब्दावली निर्माण के कारण इस प्रयुक्ति के लिए हिंदी सक्षम होती जा रही है। भाषा की प्रस्तुत प्रयुक्ति का संबंध कानूनी-प्रक्रिया एवं न्यायालयों से होने के कारण यह आम जनता के लिए दुरुह, जटिल और नीरस होती है। फिर भी विधि एवं कानून के क्षेत्र में हिंदी के प्रयोजनमूलक रूप को महत्व दिया जा रहा है। हिंदी के इस रूप में तकनीकी शब्दावली, लम्बे वाक्य, कानूनी-प्रक्रिया से जुड़े शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है।

7. वैज्ञानिक एवं तकनीकी भाषा प्रयुक्ति - इस प्रयुक्ति का संबंध विज्ञान एवं तकनीकी शब्दावली से है। जिसका प्रयोग विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में होता है, जो 'वैज्ञानिक एवं तकनीकी हिंदी' कहलाता है। हिंदी की प्रयोजनमूलक प्रयुक्ति का यह नया रूप है। राजभाषा प्रयोग संबंधी राष्ट्रपति के 27 अप्रैल 1960 के आदेशानुसार भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अधीन वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना 1961 ई.स. में की गई थी। इस आयोग ने इन विषयों संबंधित शब्दावलियों एवं कोशों का निर्माण किया। जिसके कारण इस प्रयुक्ति का अधिक ठोस रूप से विकास हुआ। विज्ञान की भाषा सुगठित व तर्कसंगत होनी चाहिए। विज्ञान और तकनीकी की भाषा का रुप सामान्य भाषा से भिन्न होता है। इसमें विशिष्ट सूत्रों एवं पदार्थों को पारिभाषिक अर्थों में अभिव्यक्त किया जाता है। ये अनेकार्थी नहीं होने चाहिए। हिंदी ने इसके लिए तत्सम तथा विदेशी शब्दों को स्वीकार कर अपने शब्द-भंडार को समृद्ध किया है। इसके कारण ही हिंदी में आज विज्ञान, गणित, विधि, अंतरिक्ष, दूरसंचार, तकनीकी, चिकित्सा संबंधी पुस्तकों का लेखन-निर्माण हो रहा है।

उपसंहार

उपर्युक्त अध्ययन से यह सिद्ध होता है हिंदी भाषा विश्व की सर्वश्रेष्ठ भाषाओं में गिनी जाने का सामर्थ्य रखती है। इसका भविष्य बहुत उज्ज्वल है। यह एक उदार भाषा है। हिंदी भाषा जीविका परक संदर्भों से भी जुड़ी है,वही उसकी प्रयोजनमूलकता है। हिंदी साहित्य अथवा बोलचाल की भाषा ही नहीं रह गई है अपिंतु इसने जीवन और जगत के प्रत्येक क्षेत्र में घुसपैठ कर स्वयं को स्थापित किया है। आज विश्व में वैज्ञानिक तथा तकनीकी उन्नति के साथ हिंदी भाषा के व्यावहारिक क्षेत्र / प्रयोजनीय क्षेत्र का महत्व भी बढ़ गया है। यदि हिंदी अपनी क्षमताओं को ऐसे ही गढ़ती रही तो इसमें कोई संदेह नहीं कि वह अपनी प्रतिद्वंद्वी भाषा अँग्रेजी को मात देकर विश्व की सर्वश्रेष्ठ भाषा बन जाएगी।

-चंदा रानी

हिंदी अधिकारी, केआईओसीएल लिमिटेड, निगमित कार्यालय, बेंगलूरु

राजभाषा हिंदी सम्बन्धी विभिन्न समितियां

हिंदी सलाहकार समिति

भारत सरकार की राजभाषा नीति के सूचारू रूप से कार्यान्वयन के बारे में सलाह देने के उद्देश्य से विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिंदी सलाहकार समितियों की व्यवस्था की गई। इस समितियों के अध्यक्ष सम्बन्धित मंत्री होते हैं और उनका गठन 'केन्द्रीय हिंदी समिति' (जिसके अध्यक्ष माननीय प्रधानमंत्री जी हैं) की सिफारिश के आधार पर बनाए गए मार्गदर्शी सिद्धान्तों के अनुसार किया जाना अपेक्षित है। ये समितियाँ अपने-अपने मंत्रालयों/विभागों/उपक्रमों में हिंदी की प्रगति की समीक्षा करती हैं, विभाग में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के तरीके सोचती हैं और राजभाषा नीति के अनुपालन के लिए ठोस कदम उठाती है।

संसदीय राजभाषा समिति

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा के तहत यह समिति गठित की गई है। इसमें 20 लोक सभा के व 10 राज्य सभा के सदस्य होते हैं जिनका चुनाव एकल संक्रमणीय तरीके से किया जाता है। इस समिति में 10-10 सदस्यों वाली 3 उपसमितियाँ बनाईं गई हैं, प्रत्येक उपसमिति का एक समन्वयक होता है। यह समिति केन्द्र सरकार के अधीन आने वाली/सरकार द्वारा वित्त पोषित सभी संस्थानों का समय-समय पर निरीक्षण करती है और राष्ट्रपति को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करती है। राष्ट्रपति इस रिपोर्ट को संसद के प्रत्येक सदन में रखवाते हैं और राज्य सरकारों को भिजवाते हैं। राजभाषा के क्षेत्र में यह सर्वोच्च अधिकार प्राप्त समिति है।

केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति

राजभाषा विभाग के सचिव तथा भारत सरकार के हिंदी सलाहकार की अध्यक्षता में सभी मंत्रालयों/विभागों की कार्यान्वयन समितियों में समन्वय का कार्य यह समिति करती है। विभिन्न समितियों के अध्यक्ष (संयुक्त सचिव पद के समान) तथा मंत्रालयों में राजभाषा का कार्य सम्पादन करने वाले निदेशक तथा उपसचिव इसके सदस्य होते हैं। यह समिति यथासंशोधित राजभाषा अधिनियमों के उपबंधों तथा सरकारी प्रयोजनों के लिए हिंदी के प्रयोग और केन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों के गृह मंत्रालय द्वारा समय-समय पर जारी किये गये अनुदेशों के कार्यान्वयन में हुई प्रगति का पुनरीक्षण करती है और उनके अनुपालन में आयी कठिनाइयों के निराकरण के उपायों पर विचार करती है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

बड़े-बड़े नगरों में जहाँ केन्द्रीय सरकार के दस या उससे अधिक कार्यालय हैं, वहाँ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया। सन् 1976 के आदेश के अनुसार इनका गठन किया गया। इनकी सम्मिलित बैठकों में हिंदी प्रशिक्षण, हिंदी कार्यान्वयन और हिंदी अनुवाद, आदि के सम्बन्ध में अनुभव होने वाली सामान्य कठिनाइयों के बारे में चर्चा की जाती है और नगर के विभिन्न कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए जो उपाय किये गये हैं उनसे परस्पर लाभ उठाया जाता है।

जिन नगरों में 'नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों' का गठन होगा उनकी बैठकों में अपने कार्यालय के प्रतिनिधि के रूप में राजभाषा अधिकारी कार्यालय प्रधान के साथ भाग लेते हैं। बैठकें वर्ष में दो बार होती हैं। इनकी अध्यक्षता नगर के वरिष्ठतम अधिकारी करते हैं। समिति की बैठकों में नगर में स्थित सभी केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों तथा उपक्रमों के प्रधान भाग लेते हैं, कार्यालयों की तिमाही प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा होती है और हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए सुझाव प्रदान किए जाते हैं। हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने में इन बैठकों से विशेष लाभ हुआ है। हर वर्ष विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन भी इस समिति की अध्यक्षता में आयोजित किया जाता है।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

भारत सरकार के प्रत्येक मंत्रालय/विभाग, सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम/बैंक/स्वायत संस्था आदि में राजभाषा-आदेशों का कार्यान्वयन ठीक-ठीक चलाने के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन कार्यालय ज्ञापन सं. 6/63/64-रा.भा. दिनांक 10-12-1964 के आधार पर सन् 1965 में किया गया। इस समिति के सुपुर्द मोटे तौर पर निम्नलिखित कार्य सौंपे गये :

हिंदी के प्रयोग के सम्बन्ध में गृह मंत्रालय के अनुदेशों के कार्यान्वयन का पुनरीक्षण करना और उस बारे में आरम्भिक तथा अन्य कार्रवाई करना।

तिमाही प्रगति रिपोर्टों का पुनरीक्षण करना।

कार्यान्वयन सम्बन्धी कठिनाइयों को देखना और उनका हल निकालना।

हिंदी के प्रशिक्षण के बारे में अनुदेशों का परिपालन तथा हिंदी टंकण तथा आशुलिपि में प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए कर्मचारियों को उपयुक्त संख्या में भेजना।

-श्रीगंधा फीचर डेस्क

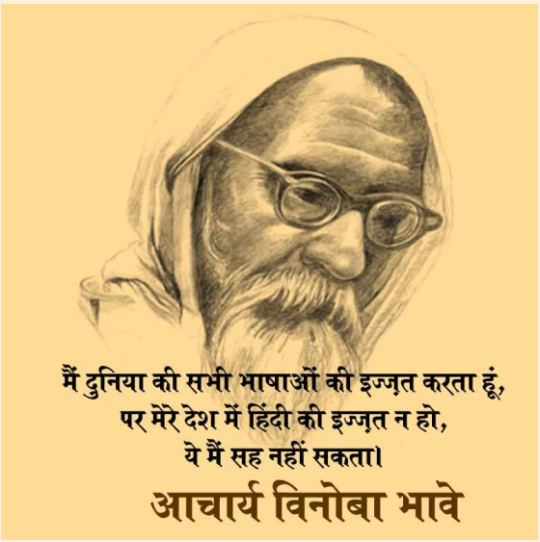

स्वच्छ, स्वस्थ और हरित पर्यावरण के निर्माण में
केआईओसीएल का निरंतर योगदान

सभी अंतर्राष्ट्रीय मानकों जैसे - आईएसओ 9001:2015, आईएसओ 14001:2015 एवं ओएचएसएएस 18001:2007 का अनुपालन करते हुए केआईओसीएल ने लौह अयस्क खनन, अनुलाभीकरण, पैलेटीकरण और फाउंड्री श्रेणी के पिग आयरन के निर्माण में 4 दशक से अधिक का सफ़र तय किया है। केआईओसीएल देश के लिए निरंतर मूल्यवान विदेशी मुद्रा अर्जित कर राज्य और केंद्र के राजकीय-कोष में योगदान दे रहा है।

राष्ट्रीय इस्पात नीति 2017 के अनुरूप वित्त वर्ष 2030 तक 300 मिलियन टन की इस्पात-क्षमता को प्राप्त करने के लिए केआईओसीएल एक सक्रिय भागीदार की भूमिका में है। केआईओसीएल ने कुद्रेमुख क्षेत्र में खान के बहाव एवं मिट्टी के कटाव की रोकथाम के लिए पहले ही 7.5 मिलियन से अधिक पौधारोपण किया है। सीएसआर के अंतर्गत कंपनी, स्वास्थ्य, सामुदायिक विकास, शिक्षा, पेय-जल, स्वच्छता एवं स्वच्छ भारत-स्वच्छ विद्यालय अभियान हेतु पर्याप्त राशि व्यय कर रही है। केआईओसीएल एक शून्य उत्सर्जन कंपनी के रूप में लगातार पर्यावरण की दीर्घकालिकता के लिए भी योगदान कर रहा है।

पैलेट संयंत्र

डीआईएसपी

पैलेट नौलदान

केआईओसीएल लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम)

II ब्लॉक, कोरमंगला, बेंगलूरु-560034, कर्नाटक राज्य, भारत

वेबसाइट : www.kioclltd.in

आईएसओ 9001:2015, आईएसओ 14001:2015 तथा ओएचएसएएस 45001:2018 कंपनी

आत्मनिर्भर भारत बनाने में केआईओसीएल एक सक्रिय भागीदार है।

पर्यावरण संरक्षण – हमारा ध्येय हमारा उत्साह

KUDREMUKH

केआईओसीएल लिमिटेड

॥ ब्लॉक,कोरमंगला

निगमित कार्यालय, बेंगलूरु - 560034

रूपरेखा विन्यास -सूचना प्रौद्योगिकी विभाग